अंक : अप्रेल–जून–25

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अप्रेल-जून 2025

बरस : 48 अंक : 3 पूर्णांक : 167

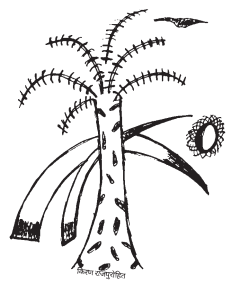

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

संपादक-मंडल
डॉ. मदन सैनी
डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'
किरण राजपुरोहित 'नितिला'
मोनिका गौड़

■

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)
www.rbhpsdungargarh.com
e-mail : rajasthalee@gmail.com

■

आवरण
जय प्रकाश राजपुरोहित

रेखाचित्राम
किरण राजपुरोहित 'नितिला'

सैयोग राशि

पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

सम्पादकीय

राजस्थानी व्यंग्य साहित्य में रचाव री जरूरत — *रवि पुरोहित* — 3

व्यंग्य

बां रा भगवान! — *मंगत बादल* — 5

आलेख

गोस्वामी तुलसीदासजी रै ग्रंथां मांय लोक-सूंण — *सत्यदीप* — 25

संस्मरण

चमत्कार नै नमस्कार — *शंकरसिंह राजपुरोहित* — 14

कहाणी

छियां-सो कीं — *पूर्ण शर्मा 'पूरण'* — 19

पेमली — *डॉ. अनिता वर्मा* — 27

आखरी जातरा — *जीनस कंवर* — 32

विधवा सुहागण — *पायल गुप्ता 'पहल'* — 37

गजल

बंदर-बांट / कांई हाल है? — *राजाराम स्वर्णकार* — 41

चिड़कल / होणो है, सो होणो है — *पूनम चंद गोदारा* — 42

कविता

सटको / गोरी थारो रूप / रुतां रो मेळो — *सीमा पारीक* — 44

कूंत

'आस-औलाद' में ल्हुक्या आगलै रचाव रा अैनाण — *दुलाराम सहारण* — 45

संपादकीय

राजस्थानी व्यंग्य साहित्य में रचाव री जरूरत

भारतीय वाङ्मय मांय रचाव री न्यारी-न्यारी विधावां मांय व्यंग्य अबै अेक खास विधा रै रूप में थापित होय चुक्यो है। पैली व्यंग्य रा दरसण आपां नै लोक-साहित्य में ई होवता हा। लोक में प्रचलित कहावतां अर मुहावरां में इणां रो सै सूं बेसी बरतारो होवतो, क्यूंकै अै अेक तरै सूं वक्रोक्तियां होवती ही। भारतीय साहित्य में 'वक्रोक्ति' नै ईज इण विधा रो आधार मानीज्यो है। इणसूं ई व्यंग्य अर व्यंजना जैड़ा सबदां रो उद्भव होयो। आपणै अठै रा पौराणिक अर धार्मिक ग्रंथां में ई वक्रोक्तियां रै रूप में व्यंग्य पैलां सूं ई प्रचलित हो, पण जगत रै आधुनिक साहित्य मांय व्यंग्य विधा री सरुआत ई साहित्य री दूजी विधावां री भांत आथूणै साहित्य सूं हुयी। अेनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका मांय गार्नेट लिख्यो है, ''साहित्य री विधा रै रूप में व्यंग्य हास्यास्पद कै असामान्य रै पेटै हास-परिहास कै रीस दिखावण री सबळ अभिव्यक्ति है। हास्यविहूणो व्यंग्य गाळ काढण ज्यूं अर साहित्य-विधाविहूणो व्यंग्य भांड री भांत हुया करै।''

इणी भांत आथूणा समालोचक मैथ्यू हागर्थ आपरै ग्रंथ 'सटायर' मांय इण विधा बाबत लिखै, ''व्यंग्य चेतावणी देवै कै मिनख अेक खतरनाक जिनावर है, जिण मांय मूरखतापूरण काम करण री असींव खिमता है अर जे व्यंग्य सूं इण साच रो सफींटवो मंडाण कर दियो जावै, तो घणो ई है। मिनख रै गौरव रो वरणाव करणो तो कवियां रो काम है।'' भारत रा ख्यातनांव व्यंग्यकार प्रभाकर माचवे आपरै व्यंग्य-संग्रै 'तेल की पकौड़ियां' री 'म्हारी बात' में कैवै, ''म्हारै सारू व्यंग्य कोई पोज, अंदाज, लटको कै बौद्धिक कसरत कोनी, बल्कै अेक जरूरी अस्तर है। सफाई करण सारू किणी नै तो आपरा हाथ कोझा करणा ई पड़ै। किणी न किणी नै भूंड रो ठीकरो आपरै माथै पर लेवणो ई पड़ै।''

भारत री दूजी प्रांतीय भासावां री भांत राजस्थानी में ई व्यंग्य विधा में समै-समै पर सिरजण होवतो रैयो है, फेरूं ई अबार तांई इणरी रफ्तार 'कछुआ चाल' ई बण्योड़ी है। राजस्थानी व्यंग्यकारां रा आंगळ्यां माथै गिणावै जित्ता ई नांव अर बित्ता ई वांरा व्यंग्य-संग्रै आजलग साम्हीं आया है। आधुनिक राजस्थानी साहित्य में व्यंग्य विधा री सखरी सरुआत करणियां में नागराज शर्मा, बुद्धिप्रकाश पारीक, डॉ. मदन केवलिया, सांवर दइया अर त्रिलोक गोयल रा नांव खास रूप सूं लिया जाय सकै। इणां रै पछै रामकुमार ओझा 'बुद्धिजीवी', विनोद सोमानी 'हंस', भगवती लाल व्यास, भगवती प्रसाद चौधरी, श्याम गोइन्का, मनोहर सिंह राठौड़, हरमन चौहान, दुर्गेश, भंवरलाल भ्रमर, श्याम जांगिड़, प्रह्लाद श्रीमाली, देवकिशन राजपुरोहित, मंगत बादल, बुलाकी शर्मा, श्यामसुंदर भारती, शरद उपाध्याय, कैलासदान लाळस, पूरन सरमा, छत्र छाजेड़, शंकरसिंह राजपुरोहित, राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर', पवन पहाड़िया, रामजीलाल घोड़ेला अर रामरतन लटियाल आद राजस्थानी री व्यंग्य-विधा में आपरी कलम चलाई है, पण लगोलग व्यंग्य लिखणिया लेखकां रा नांव आंगळ्यां माथै गिणावै जित्ता ई है। लारला साठ बरसां में ऊपरला आं व्यंग्यकारां मांय सूं घणकरा रचनाकारां रो अेक-अेक व्यंग्य-संग्रै ई साम्हीं आयो है, जदकै दो व्यंग्य-संग्रै देवणिया लेखक गिणती रा है। बीकानेर रा बुलाकी शर्मा जरूर व्यंग्य विधा में लगोलग लिखता रैया है अर इणां रा अबार लग चार व्यंग्य-संग्रै 'कवि, कविता अर घरआळी', 'इज्जत में इजाफो', 'आपां महान' अर 'तैरूंडै में किताब' आय चुक्या है। राजस्थानी में धारदार व्यंग्य लिखणिया अर इण विधा नै भारतीय साहित्य रै सैंजोड़ ऊभी करण में आगीवाण रैया सांवर दइया घणा ई व्यंग्य लिख्या, पण वांरो व्यंग्य-संग्रै वांरै सुरगवास पछै 'इक्यावन व्यंग्य' नांव सूं साम्हीं आयो।

व्यंग्य, साहित्य री वा विधा है, जिणनै पाठक घणी रुचि सूं चटखारा लेय'र पढै। राजस्थानी री पत्र-पत्रिकावां में ई कदै-कदास कोई व्यंग्य छपै, तो वो म्हारै जिसा पाठक री पैली पसंद हुया करै। राजस्थानी व्यंग्यकारां में ऊपर गिणायोड़ा नामां मांय सूं केई लेखकां री बरसां सूं कोई व्यंग्य-रचना देखण नै नीं मिल रैयी है। अैड़ी बात ई नीं है कै वै उमरदराज होयग्या होवै। दाखलै सरूप शंकरसिंह राजपुरोहित रो व्यंग्य-संग्रै 'म्रित्यु रासौ' घणो चरचा में रैयो अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर समेत मोकळी साहित्यिक संस्थावां सूं पुरस्कृत ई हुयो, पण 2017 में छप्यै इण व्यंग्य-संग्रै रै पछै वांरी अेक ई व्यंग्य-रचना किणी पत्र-पत्रिका मांय देखण नै नीं मिली। कैवण रो मतलब औ कै राजस्थानी व्यंग्य साहित्य नै रातो-मातो करण सारू इण मांय लगोलग सिरजण री जरूरत है। 'राजस्थली' रै इण अंक री पैली रचना रै रूप में वरिष्ठ साहित्यकार मंगत बादल रो व्यंग्य 'बां रा भगवान!' छापता थकां राजस्थानी व्यंग्यकारां सूं अरज है कै वै छठै-छमास ई व्यंग्य लिखै, तो वांरी रचनावां रो इण पत्रिका में घणै मान स्वागत है।

-रवि पुरोहित

 ISSN : 2320-0995

मंगत बादल

बां रा भगवान!

''बाबूजी! ओ बाबूजी! थोड़ो थम्या!'' म्हैं सोच्यो कोई मिनख किणी काम सारू म्हनै हेलो पाड़ै। म्हैं थोड़ो थम'र इन्नै-बिन्नै च्यारूं कानी तकायो, पण म्हनै कोई कोनी दिख्यो। म्हैं सोच्यो कै म्हनै कोई बैम हुयो है। लारलै केई दिनां सूं कानां में घूं-घूं-सी चालती रैवै।

घरआळी भी कैवै ही, ''आजकाल थांनै कीं सुणै ई कोनी। बहरोपण उतरग्यो कांई? हैं...अैं...अैं...! हैं...अैं...अैं...! करता रैवौ। आप रा कान ई चैक करवाल्यो!''

म्हैं भी सोचै हो। अेकर चैक करवाणै में कांई हरज है? बियां तो कैवै कै इण ऊमर में कम सुणनो चोखै भागआळै मिनख रै पल्लै आवै। भगवान री उण माथै मैरबानी हुवै, क्यूंकै इण औस्था में मिनख सू घरआळां री चावनावां कीं बध जावै। बेटा-बेटी आप-आपरी मांग पूरी करणै सारू आप-आपरै ढंग सूं कोसिस कर'र बाप नाम रै जीव माथै दबाव बणावता रैवै। मिनख इण बगत अैड़ो चक्कर-घिन्नी बण्यो रैवै कै कदे-कदे तो बो संन्यास तक लेणै री सोचण लाग जावै अर कदे-कदे उणनै म्रित्युबोध भी घेर लेवै। औ अैड़ो बगत हुवै जद मिनख दो पाटन रै बिचाळै पूरी तरां फसियोड़ो हुवै अर उणनै कबीर री साखियां रा अरथाव आपीआप समझ आवण लाग जावै। आं दिनां ई उणनै खुद रै ब्याह सारू औ बोध हुवै—'कबीरा ढोल बजायके दियो काठ में पांय।' फेरा करावण आळै पंडत अर रिस्तो करावण आळै बिचोळियै सारू उणरै मूंडै सूं बद-दुआवां निकळै। अब उणरै समझ में आवै कै फेरा खाय'र मिनख कीकर फेर में पड़ै! म्हारो विचार है कै कदे

:: ठिकाणो ::
शास्त्री कॉलोनी
रायसिंहनगर-335051
मो. 9414989707

अैड़ी मनगत में ई जद बां चादर तो बणाली, पण आगै बाजार में गिरायक कोनी मिल्या। उण बगत 'दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय' जैड़ी ओळ्यां रची हुवैली। दो-दो टाबर ब्यावण आळा अर बजार में मंदी इतरी कै बेचणै सारू जिकी चादर ही जिकी 'जस की तस' धरणी पड़ी। रिसाणा हुय'र बजार नै बाळण सारू हाथ में लांपोलेय'र खड़्या हुयग्या—कबीरा खड़ा बाजार में लिये मुराड़ा हाथ। आजकाल म्हारी मनगत कीं अैड़ी ई चालै ही। म्हैं उण आवाज नै अणसुणी करता थकां आगै चाल पड़्यो। म्हारै चालतां ई ओजूं हेलो सुणीज्यो, ''चाल क्यूं पड़्यां बाबूजी? थमो अेकर! म्हैं भी आऊं! थोड़ी देर आप साथै कीं बातां करणी है।''

म्हैं ओजूं च्यारूं कानी देख्यो, पण म्हनै कोई आवतो कोनी दिख्यो। टाबरपणै में सुण्यो कै केई भटकती आतमावां भी मिनख नै हेलो मार'र थाम लेवै अर उण में प्रवेस कर जावै। पछै उणनै खूब नाच नचावै। अबकाळै म्हैं भरम में भी कोनी हो। म्हैं स्पस्ट आवाज सुणी ही। कोई कोनी दिख्यो, तो डरणो सुभाविक हो।

दरअसल, म्हैं उण दिन आधै दिन री छुट्टी लेय'र घर कानी उंपाळो ई चाल पड़्यो। बियां तो अफसरां नै छुट्टी लेणै री कदेई जरूरत ई कोनी पड़ै, क्यूंकै आपरै हेठै काम करणियां नै किणी भी सरकारी काम रो कैय'र कठैई मजै सूं जा सकै। आज पण म्हैं सिर दुखणै रो बहानो लेय'र आधै दिन री छुट्टी री दरखास धर'र, बठै ओ.अेस. नै बताय'र घर कानी चाल पड़्यो जिकै सूं मैच देखणै में कोई भिचोळ ना पड़ै। आज गाडी लेय'र कोनी आयो। सोचै हो—आज घरां जाय'र वन-डे क्रिकेट मैच रा मजा लेऊंला। इण कारण म्हैं घर कानी जाणै रो छोटो रास्तो पकड़्यो। इण रास्तै में पैली मसीत अर पछै अेक मिंदर पड़ै। आभै सूं उण दिन लाय बरसै ही। सगळा मारग सूना पड़्या। कदे-कदास कोई साइकिल या मोटरसाइकिल आळो या कोई बीजो वाहन जरूर निकळै हो, पण दिनूगै-आथण व्यस्त रैवण आळी सड़क नै इण भांत खाली देखणो भी अचंभै सूं कम कोनी हो। म्हनै अेकर तो लाग्यो—लारलै बरस री भांत आज भी अठै कोई हादसो तो कोनी हुयो? पण हादसो हुंवतो तो म्हनै दफ्तर में ई बेरो लाग जावतो। लारलै बरस आं दिनां में ई मसीत कनै दंगो हुयो, जिकै में तीन मिनख मारया गया अर केई घायल हुयग्या। बां रा कातिल आज तांई पकड़्या भी कोनी गया। म्हैं सोचै हो—इण सुनसान में कोई सिरफिरो आय'र म्हारै पेट में छुरो मार'र चल्यो जावै तो अठै ना कोई गवाही देवण आळो अर ना घर तांई खबर पुगावण आळो। म्हैं तावळो-तावळो चालण लाग्यो तो ओजूं हेलो आयो, ''इण भांत डरो ना! अठै थांरै कोई छुरो कोनी मारै। अठै तो बापड़ा सगळा ई गरीब लोग रैवै। अै तो खुद ई मरियोड़ा जिस्या है, अै किणनै मारैला! मारण आळा तो दो घंटां सारू बारै सूं आया अर आपरो काम कर'र गया परा।''

अब तो म्हनै औ भी सक कोनी रैयो कै म्हारा कान गूंजै। आ तो स्पस्ट किणी मिनख री आवाज ही। म्हनै पण इण बात रो अचरज हुयो कै ओ म्हारै मन री बात कीकर कैयग्यौ ? म्हैं हिम्मत कर बोल्यो, ''आप कितरी देर सूं हेला पाड़्यां जाय रैया हो। जिका भी हो, साम्हीं क्यूं कोनी आओ ? कठै सूं बोलो ?''

जवाब आयो, ''डर ना भाई ! म्हैं खुदा बोलूं ! थारै मांयनै सूं बोलूं ! म्हैं भी अेकलो हूं। कोई बात करण आळो ई कोनी। इण कारण थनै हेलो पाड़्यो। म्हैं केई देर थारै साथै बगत बिताणो चावूं !''

''आप खुदा हो तो मसीत में जाओ ! बात करणी है तो किणी मुसळमान नै ढूंढो ! म्हारो क्यूं बगत खराब करो ? मांयनै सूं कठै सूं बोलो ? म्हैं ई लाध्यो थांनै मजाक करण नै ?''

''म्हैं मजाक कोनी करूं ! साची कैवूं !''

''पण म्हैं तो हिंदू हूं अर आ बात म्हैं गरब सूं कैवूं। म्हारै कनै आय'र आप कांई करोला ? थे तो बां रा भगवान हो ! बां कनै ई जाओ अर आप कैवो मांयनै सूं बोलूं, पण आवाज तो आपरी बारै सूं आवै।''

''मांयली आवाज थे सुणो कठै हो ?'' कैयां पछै अेक अट्टहास री गूंज च्यारूं कानी सूं उमड़'र म्हारै कानां में आई। म्हैं डरग्यो। म्हारा पग जियां धरती रै चिपग्या। म्हैं भाज भी कोनी सकै हो। आ कांई बला आयगी आज ! म्हैं मन में सोचै हो। बाकी च्यारूं कानी सो-कीं सामान्य दिखै हो। आवाज भी सिरफ म्हारै ई कानां में गूंजै ही।

''अरे भला मिनख ! म्हैं कोई बला कोनी। साच्याणी खुदा हूं।''

बो म्हारै मन री हरेक बात रो जवाब देवै हो। म्हैं कैयो, ''आप खुदा हो तो बारै क्यूं खड़्या हो ? मसीत में क्यूं कोनी जाओ ? बारै कितरी गरमी पड़ै। पंछी तकात आभै में उडता कोनी दिखै अर आप खुदा हुय'र भी इण भांत तपती लाय में धक्का खावता फिरो ?''

''म्हनै बठै सूं काढ दियो ! और सुण ! खुदा अर भगवान रै अलावा म्हारा और भी घणा ई नाम है, पण म्हैं अेक ईज हूं।'' अबकाळै उणरै स्वर में उदासी ही।

म्हारै झटको-सो लाग्यो, ''आप साच्याणी खुदा हो तो आपनै मसीत सूं कुण काढ सकै ? बा तो बणी ई आप सारू है अर जे काढ ई दिया तो बै बठै इबादत किण री करै ?''

'इबादत ?'' खुदा जोर सूं हांस्यौ, ''कुण करै इबादत ? सगळा आप-आपरा मांग-पत्र लेय'र आवै अर इबादत रै बहानै पेस कर देवै। म्हैं औ देख-देख'र आखतो हुयग्यो। अेक दिन लोग बठै जिकी नै इबादत कैवै, करणै सारू भेळा हुया तो बठै किणी बम फेंक दियो। पांच लोग मरग्या अर केई घायल हुयग्या। म्हैं उण जग्यां माथै रैय'र करतो भी कांई ?''

सुण'र म्हैं और डरग्यो। औ मिनख जरूर कोई जादूगर है, जिको खुद तो कठैई लुक्योड़ो बैठ्यो है अर आपरी आवाज म्हारै तांई पुगाय'र म्हारो जायजो लेवै।''

उण म्हारै मन री बात पकड़ ली। बोल्यो, ''आ ईज तो मिनख में कमी है कै बो किणी रो भी विस्वास कोनी करै। म्हैं भगवान हूं! तो भी म्हारो विस्वास कोनी करै! बियां जग्यां-जग्यां आपरो माथो रगड़तो फिरबो करै। सुण! म्हैं थारो कोई जायजो कोनी लेण लाग रैयो। थूं अेक दफ्तर में छोटा-सो अधिकारी है। रिस्वत आद लेय'र काम करै! इण बातां नै दुनियां जाणै। म्हनै तो थारै सूं बस दो-च्यार बात ई करणी है।''

अब म्हैं फंसग्यो। इण तो म्हारी पूरी कुंडळी खंगाळ राखी है। म्हारै बारै में औ सो-कीं जाणै। म्हैं जिकी भी बात सोचूं, उणरो जवाब दे देवै। इणरै बावजूद म्हैं हिम्मत कर'र कैयो, ''आप जे हिंदुआं रा भी भगवान हो तो मिंदर में जाय'र रैवो। इतरा मिंदर और क्यां खातर बणा राख्या है। आप बठै नीं जाओला तो कुण जावैलो! आपरै भगतां सूं मिलो। बै भी तो आपरी उडीक राखै है। बांनै भी तो बताओ कै भगवान अर खुदा आद म्हैं ईज हूं। आपरै कैवणै सूं स्यात आं में अक्कल आ जावै लोगां नै आपस में लड़वाय'र तो ना मरवावै।''

अबकाळै अेक गैरी अर डूब्योड़ी-सी आवाज आई, ''भगत म्हारी सुणै ई कठै है! मिंदर सूं तो म्हनै सदियां पैली ई बारै काढ दियो। बठै अब जावै भी कुण है! कोई भगत तो जावै कोनी मंगता ई मंगता जावै। मिंदर रै बारै भी मंगता अर मांयनै भी मंगता। कांई करूं बठै जाय'र?''

''आपनै आपरै घर सूं ई बेदखल कर दिया अर अब आप बेघर-बार रा हुय'र सदियां सूं भटकता फिरो। आप क्यांरा भगवान हो? आप बां रै खिलाफ कोई अैक्सन क्यूं कोनी लियो? आप तो सुपर पॉवर हो। अब थे ई बताओ कै म्हारै थांरी बात कीकर जचै कै आप भगवान हो?''

''आपनै कुण कैय दियो कै मिंदर, मसीत आद म्हारा घर है? औ तो मिनख ई कैवै, म्हैं तो कदे औ सोच्यो ई कोनी कै अठै भी म्हारो घर हुय सकै।''

''चलो! मिंदर या मसीत में ना सही, पण आप तो गिरजाघर में भी जा सको। बठै जाणै सूं आपनै कुण रोक सकै?''

अबकाळै ओजूं हांसणै री आवाज गूंजी—''बठै ईसा आयो नीं म्हारो संदेस देणै सारू। उणनै तो क्रास माथै लटका राख्यो है। हर कठैई मिनख री फितरत अेकसी है। म्हैं बठै गयो तो म्हनै कैड़ो बखस देवैला!''

''म्हारै थांरी अेक बात कोनी जची।''

''कैड़ी बात?''

''आप कैवो कै म्हैं अेक ई हूं। पण म्हैं हिंदू हूं अर बै मुसळमान, ईसाई, पारसी आद। तो फेर म्हारो सगळां रो भगवान अेक कीकर हुय सकै?'' म्हैं सोचै हो, औ जिको खुद नै भगवान बतावै, म्हारै तरक साम्हीं हार मान लेवैलो। पण बो बोल्यो, ''हे मिनख! थारी समझ ई छोटी है। म्हैं कांई करूं? म्हैं तो कदे हिंदू, मुसळमान, ईसाई कोनी बणाया। म्हैं तो फगत मिनख ई बणाया अर आज भी मिनख ई बणाऊं। आगै सांचां में तो थे ढाळ्यां जाओ। इण रो म्हारै कनै कांई इलाज है?''

''तो अब थे रैवो कठै हो?'' म्हैं हिम्मत कर पूछ ई लियो।

''आ पूरी कायनात म्हारी ई है। म्हैं तो हरेक जग्यां विराजमान हूं। जठै मरजी हुवै जा सकूं। म्हनै कोई पासपोर्ट या वीजो तो लेणो कोनी!'' भगवान मजाक करी।

''सुणो भगवानजी!'' म्हैं अबकाळे बात बदळी, ''आप म्हारै में अैड़ो कांई देख्यो कै आप म्हारै सूं बात करणै री तेवड़ ली? म्हैं तो आपरी निगाह में कोई चोखो मिनख ई कोनी। रिस्वतखोर अर झूठो हूं। आप सूं बात करणै सारू तो बडा-बडा रिसी-मुनी भी तरसै। आप तो म्हारै साथै इण भांत बात करो जियां म्हारा कोई दोस्त हो।'' म्हैं हिम्मत कर पूछ लियो।

''जे कोई मानै तो दोस्त म्हैं सगळां रो ई हूं। रैयी बात आप सूं बात करणै री। तो आज आपरै मन में आपरी लारली जिंदगी सारू सोच'र कीं पिछतावो मैसूस हुयो। इण कारण म्हैं थासूं बात करणै री सोची।''

''पिछतावो! म्हनै तो कोई पिछतावो कोनी हुयो। म्हैं क्यांरो पिछतावो करयो? जद म्हैं कोई गळत काम करूं ई कोनी।''

''झूठ बोलै थूं। आज उण गरीब रो काम करणै रा उण सूं थूं पांच हजार रिपिया रिस्वत रा लिया। लिया'क कोनी? बै अब भी थारै इण ब्रीफकेस में पड़्या है।'' भगवान जोर देय'र कैयो।

सुण'र म्हैं डरग्यो। अब बोलतो भी कांई? जबान माथै ताळो लागग्यो।

''बो तो काम करवाय'र गयो परो, पण थारै मन में बड़ी गिलाणी हुई। थूं दफ्तर सूं बारै आयनै उणनै ढूंढ्यो भी हो। उण बगत जे बो थनै मिल जावतो तो उणनै पईसा पाछा मोड़ देंवतो। इण कारण म्हैं थारै सूं बात करी है कै थारै दिल में गरीबां सारू थोड़ी हया-दया बच्योड़ी है।''

अब तो म्हैं घणो डरग्यो। म्हैं तावळै सै आपरै सगळा गाभां नै आछी भांत सूं देख्या। गाभां नै झड़काया भी। हाथ में लियोड़ै ब्रीफकेस री चोखै ढंग सूं जांच करी। जरूर किणी अेसीडी, ईडी या विजिलेंस आळै किणी मिनख म्हारै साथै कोई जाबक नान्हो-सो माइक फिट कर राख्यो है। उणरी आवाज ई म्हनै सुणीज रैयी। अब बो माइक पण कठै फिट करियोड़ो है, औ बेरो कोनी लागै। आवाज अेकदम साफ आवै। म्हैं डर सूं कांपण

लागग्यो कै अब घरां पूगतां ई आगै पुलिस त्यार मिलैली अर पकड़ लेवैली। इण थिती में आपरै घरां मोबाइल कर'र पूछतां भी डर लागै हो। म्हनै चक्कर-सो आयग्यो। पगां रै थड़ा बंधग्या। आंख्यां पथराइजगी। आखो सरीर पसेवै सूं भीजग्यो। म्हनै लाग्यो कै म्हैं चक्कर खाय'र पड़ण आळो ई हो।

म्हारो औ हाल देख'र ओजूं आवाज आई, ''मिनख! डर ना। म्हैं अेसीडी, ईडी या विजिलैंस किणी मांय सूं कोनी। ना थारै कठैई माइक फिट है। म्हैं भगवान ई हूं। बियां तो थे सगळा म्हारै सूं मिलणै सारू कठै-कठै माथो रगड़ता रैवो अर कनै आयग्यो तो सक करो। थूं जद दफ्तर सूं चाल्यो तो औ रास्तो इण कारण पकड़्यो कै बिचाळै मिंदर पड़ै। थूं बठै आज री रिस्वत रो दसवों हिस्सो चढाणै रो संकळप करयो, पण पछै मन बदळग्यो अर अब सोच राख्यो है कै आज तो पचास रिपिया ई चढास्यूं। आगै कदे ई सगळी उधार चुकता कर दूंला। थूं इण भांत म्हारै सूं ई बेईमानी कर कितरा रिपिया डकार चुक्यो है। थारै कनै कोई हिसाब है?'' कैय'र भगवान जोर सूं हांस्या, ''रिस्वत री काळी कमाई नै न्यायसंगत बणाणै सारू म्हारो भी दसवों हिस्सो घालदै! क्यूं! म्हनै भी पार्टनर बणा लियो, फेर भी म्हारै सूं बेईमानी?''

म्हैं कीं आस्वस्त हुयो। आ बात तो सिरफ म्हारै मन में ईज ही। म्हैं किणी नै बताई ई कोनी। अै किणी सरकारी अेजेंसी सूं तो कोनी, पण भगवान अठै इण बळतै तावड़ै में क्यूं भटकै? है तो कोई और ई मामलो। म्हैं होळै-होळै चालतो-चालतो मूंडै सूं पसेवो पूंछ'र बोल्यो, ''म्हारै आपरी बात अब कीं जची है कै आप हो तो भगवान ई। आपरी आवाज तो म्हनै सुणीजै, पण आप दिखो क्यूं कोनी? आप कठै हो? आप म्हनै दिखो क्यूं कोनी? आपरी आवाज किण दिसा सूं आवै? म्हारै कीं समझ में कोनी आवै। बस औ ईज आखरी सवाल आप सूं पूछणो चावूं।''

बो ईज जोर रो अट्टहास—''रे मिनख! थूं म्हनै देखणो चावै ई कोनी। औ देख! म्हैं औ खड़्यो थारै साम्हीं! थारै मन में! हिम्मत कर! मांयनै झांक!''

म्हैं ओजूं पसेवे सूं हळाडोब हुयग्यो। मन में झांकणै री म्हारी हिम्मत ई कोनी हुई। जे साच में भगवान साम्हीं आयग्या तो? म्हैं डरग्यो। तावळो-तावळो पग चकतो घर कानी चाल पड़्यो। लारै बो ई अट्टहास पून में गूंजतो सुणीजै हो। म्हैं ओजूं पसेवै सूं हळाडोब हुयग्यो। मन में झांकणै री म्हारी हिम्मत ई कोनी हुई। जे साच में भगवान साम्हीं आयग्या तो? म्हैं डरग्यो। तावळो-तावळो पग चकतो घर कानी चाल पड़्यो। लारै बो ई अट्टहास पून में गूंजतो सुणीजै हो।

◆◆

सत्यदीप

गोस्वामी तुलसीदासजी रै ग्रंथां मांय लोक-सूंण

तुलसीदासजी मानस मांय जिकी पैलपोत बात आपरै पैलै ई सिलोक में मांडै बा 'क्वचिदन्योऽपि' नै साम्हीं लावै। बै रामचरित मानस री रचना रै रचाव में मंगळाचरण मांय जियां रचै :

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा-
भाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति।

गोस्वामी तुलसीदास जी आपरा अै भाव खाली 'मानस' मांय ई नीं अड़ोप्या है। बां आखै चोखळै रै वैवार-परंपरावां रा मिणियां आपरी मोकळी पोथ्यां में रचनावां रै कसूमल तागां में पोया है। अठै आयनै 'क्वचिदन्योऽपि' चरूड़ हुवै। जियां कै महाभारत रै सारू कैयीजै कै, ''जिको महाभारत में लिख्यो लाधै, बो आखै जगत बैवार में मिलै अर जिको महाभारत में नीं है बो आखै जगत में कठैई नीं लाधै।''

बियां ई तुलसीदासजी चौफेर फिरोळ-फिरोळ'र आपरी लिखण-पावरी में जठै-कठै जिकी भी, लोक-वैवार री अर मिनख रै कल्याण री ओपती अर सोंवती चीज लाधी, बींनै सावचेती सांभ'र धरली। कवितावली रै छंद 15 में जद गोस्वामी जी अेक पंक्ति कथै—'लोक लखि बोलिये, पुनीत रिसी मारषि' इणरो अरथाव ओ हुवै कै लोक-वैवार नै जाण-पिछाण'र जिकी बात बोलीजै, बा रिसी मुनियां री वाणी सिरखी पवितर हुवै। जठै गोस्वामीजी ग्यान, दरसण, भगती अर भजन रा मोकळा भाव आपरी लेखणी सूं बतावै, बठै ई बै लोक री रीत, लोक रो सुभाव अर लोक में रच्या-बस्या भावां नै भी चरूड़ कर मिनख मंगळ रा

:: ठिकाणो ::
'अपनत्व'
वार्ड नं. 24, आडसर बास
श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
राजस्थान-331803
मो. 9460905951

दूजा पख भी साम्हळणै में कोई कोर-कसर को छोडै नीं। लोक रो सुभाव हुवै—सुख री चावना अर दुख आवणै सूं पैलां उणरी जाण। इण सारू बगत सूं बाथेड़ो करतो मानखो बीती घटणावां सूं अर परकत री घटती घटणावां रै निचोड़ सूं सीखतो सूंण-कसूंण री सूझना नै केवटी है। सूंण-सरोधो मिनख मन में डूंगो बैठ्यो लाधै। गोस्वामी तुलसीदास लोकजुड़ाव नै आछी तरियां परखणो जाणै। जठै तांई समझ री पकड़ लाधै तो दीठाव में आवै कै आगै री कहणी-कथणी में जोतिस सास्तर आपणै सनातन संस्कारां रो अेक ठाडो हिस्सो भी कथीजै। जोतिस रै दो भागां में जठै अेक भाग आंक-जोतिस हुवै, बठै दूजो भाग हुवै सूंण-सास्तर। जोतिस में गिणत-फलित रा अठारै अर सूंण-सास्तर रा दस आचारज हुया है। पण आ साव साची कै भगवान शंकर इण सूंण-सास्तर रा आद सिरजणहार मानीजै। भांत-भांत रा सास्तर ग्रंथां में सूंण-विचार संवार'र राखीज्या है। जूना ग्यानी वराहमिहर आपरै ग्रंथ वृहत्संहिता में सूंण-सास्तर नै आछै ढंग सूं कथ्यो है, जिणमें खेती, बिणज अर चेजै सारू जका सूंण-कसूंण हुवै, बै बताया है। आपणो देस ई नीं, लगैटगै आखी जगती आप-आपरै तरीकां सूं सूंण मानती अर परोटती आई है।

तुलसीदास जी भी लोक रै आं रीत-रायतां नै जूनी जुगत, पोथ्यां रै ग्यान अर गुंभारां सूं टोय'र जोतिस-अंक अर सूंण-कुसूंण नै परगास्यो अर बां रै आछै बरणाव रा मोती आपरी घणकरी पोथ्यां में पोया है। तुलसीदासजी सूंण-सास्तर सारू 'महाभारत' अर आदूकवि वाल्मीकिजी री 'रामायण' रो स्हारो तो लियो ई है, पण इण साथै बै लोक मांय सूंण-विचार रै तागां रा सिरा काठा झाल उणां नै कविता रै संस्कार में ढाळ आपरी लेखणी सूं परगटाया है। तुलसीदासजी रा सूंण तीन तरियां निगै आवै। परकत कानी रा, जीवजंतु कानी रा, मिनख अंगां रै फड़कणै रा अर सुपना मांय दीसता दरसावां रा। मिनख रै अंगां रो फड़कणै रा भी सूंण-सरोधा हुवै। जियां सीता री जनकपुरी रै बगीचै में गोरी पूजा री बगत अंग फड़कणै री बात सारू बै कथै :

जानि गोरी अनूकूल सिय हिय हरखि ना जाई कही।
पावन मंजुल मूल, बाम अंग फड़कन लगै।

(बालकांड सो. 236)

इणमें लुगाई रो डावड़ो अंग फड़कणो सुभ मानीज्यो है। सीताजी रै जी में सुभ भावां रो आवणो अर डावड़ै अंग रै फड़कणै सूं सुभ सूंण हुया। इण सारू लोक में भी चालतो आयो है-

म्हारी आंख फरूकै डाईं, म्हानै बीर मिलै का सांई
जद जींवणी आंख फरूकै, आ कुबध घालसी काईं।।

अयोध्या कांड रै 224वैं दूहै पछै री चोपाई में आवै :

मंगल सगुन होहिं सब काहू।
फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू।।

औ सूंण-बरताव भरत रै राम सूं मिलण जावणै री बगत रो, भरतजी री दोघड़ चिंता री बात रो है। सरीर रै न्यारा-न्यारा अंगां रै फड़कणै खातर गोस्वामीजी बतावै। लोक मानता में भी लुगाई रा डावा अर मिनख रा जींवणा अंग फड़कणा सुभ हुवै तो इणसूं उळटो हुवै तो असुभ मानणै री लोक-मानता निगै आवै। भरत सूं निसाद राज जद मिलै अर उणां रो राम सूं उमड़तो हेत देखै, तो तुलसीदासजी लिखै :

लगे होन मंगळ सगुन सुनि गुनि कहा निषादु।
मिटिहि सोच होइहि हरषु पुनि परिनाम विषादु।।

(अयो. / दो. 234)

इण सूं गोस्वामी जी बताणो चावै कै जी में हेत रा भाव हुवै तो सूंण-सरोधा सगळा मंगळकारी ई हुवै। इण सारू सुंदरकांड में भी लंका जावती बगत री घटणा रो बरणाव करता तुलसीदासजी लिखै :

हरषि राम तब कीन्ह पयाना। सगुन भये सुंदर सुभ नाना।।
जासु सकल मंगलमय कीती। तासु पयान सगुन यह नीती।।
प्रभु पयान जाना बैदेही। फरकि बाम अंग जनु कहि देही।
जोइ जोइ सगुन जानकीहि होई। असगुन भयहु रावनहि सोई।

अंगां सारू लोक-विचार तुलसीदासजी जिण भांत परोट्या है, बै अपणै-आप में अनूठा है। मिनख री घड़त में पांच इंद्रियां रो घणो मैतब है, पण आ मानता भी सखरी कै विधाता मिनख नै मैसूसणै री छठी इंद्री भी दी है, जकी आं सूंण-सरोधा नै बळ देवै। काम रो सुधार-बिगाड़ कै आगै कै घटणै रो सरोधो हुवै बां सारू साम्हीं, जींयै, डायै, आगै अर पाछै मिलै जकां रो असर भी सूंण मानीजै। सूंण साथै जोतिस में आपरा सुख-दुख सोझणा मिनखमन री सदीन मनस्या रैयी है।

खर डावा बिस जींवणा, गोधा दडूकै आर।
सुगनचिड़ी साम्हीं मिलै, बरसै धारोधार।।

xx xx

डावै तीतर डावै स्यार, डावै खर बोलै असराळ ।
डावै घूघू घूं घूं करै तो लंका रो राज बिभीसण करै।

xx xx

आटो खाटो घी घड़ो, खुलै केसां नार।
चटकै मटको जोजरो, साम्हीं मिलै सुनार।।

xx xx

बिस बिलोरी बनायकी, मालाळी हिरणां
अै तो सै जींवणा भला, डावै और घणां।।

◆◆

शंकरसिंह राजपुरोहित

चमत्कार नै नमस्कार

अंगरेजी में म्हारो हाथ सरू सूं ई तंग हो। कम्पलसरी विसय होवण रै कारण आ भासा अर इणरो व्याकरण म्हारै सारू जीव रो जंजाळ बणग्यो हो। छेकड़ आंती आय'र म्हैं इण सागै माथापच्ची करणी ई छोड दी ही। बीकानेर में कोटगेट रै मांयलै पासै आयोड़ी सरकारी सार्दुल स्कूल में अंगरेजी रा व्याख्याता ओमप्रकाशजी जोशी (राजस्थानी रा चावा-ठावा साहित्यकार श्रीलाल नथमलजी जोशी रा मोबी सपूत) रै घरै कीं महीना ट्यूशन ई करी, पण म्हारै भेजा मांय वांरै बतायोड़ो ई कीं नीं बैठ रैयो हो। अेक तो इणरै सबदां री ऊंधी-सूंधी स्पेलिंगां। मतलब बीयूटी बट, सीयूटी कट, पण पीयूटी पुट। पछै 'नाइफ' अर 'नाऊ' रै आगै साइलेंट 'के' रो झमेलो। अबै आप बतावो कै 'बजट' री स्पेलिंग मांय 'यू' अर 'डी' रो कांई काम! बजट रै सागै 'पेसेंट' री स्पेलिंग ई म्हारै कदैई समझ में नीं आई अर म्हैं खुद अंगरेजी वाळी इण बीमारी रो परमानेंट पेसेंट बणग्यो हो। सबदां रै सागै टेंश री टेंशन अर ऊपर सूं रेपिड अर कोर्स रीडर पढण रो दोवड़ो दुख। कीं भी पल्लै नीं पड़ण सूं म्हैं ई म्हारा कीं मितरां री भांत इणनै 'हाऊ-वाऊ' वाळी कुतिया भासा कैवण लागग्यो हो।

कम्पलसरी विसय होवण रै उपरांत दसवीं तो अंगरेजी में ग्रेस रै सागै पास करली ही। ग्रेस रै रूप में 'जी' रो जीकारो लागण रै कारण उण टैम म्हे यार-बेली इणनै एक्स्ट्रा एबीलिटी मानता हा। छेकड़ बारवीं में ई इण जीकारै सागै जियां-तियां नाको लागग्यो, पण बी.अे. में कुत्ती कादै में अैड़ी कळीजी कै—'खा रे कुत्ता खीर'! बियां बी.अे. में अंगरेजी रा नंबर परसेंटेज में तो कोनी

:: ठिकाणो ::
राजपुरोहित-रैवास
कृपाळ भैरूं मिंदर चौक
सर्वोदय बस्ती, बीकानेर
राजस्थान-334004
मो. 7610825386

 ISSN : 2320-0995

जुड़ता हा, पण कम्पलसरी विसय होवण रै कारण इणमें पास होवणो जरूरी हो। तिण माथै उणी बरस अेक अैड़ो नियम आयो, जिणनै बांच'र म्हारी राफां फाटगी। मोटी आफत सागै नियम औ आयो कै जे बी.अे. (फाईनल) तांई अंगरेजी विसय में पास नीं होया तो पाछो बी.अे. (फर्स्ट ईयर) में भरती होवणो पड़सी। मतलब कै तीनूं बरसां में किणी अेक बरस में अंगरेजी रो पेपर पास करणो ई करणो है, नींतर तीनूं बरसां री पढाई माथै पाणी फिरसी अर सगळो कात्यो पींज्यो कपास होसी।

उण बगत अंगरेजी रो औ पेपर पचास नंबरां रो होवतो हो, जिण मांय सूं अठारा नंबर लावणा जरूरी हा। म्हारै फर्स्ट ईयर में सात नंबर आया हा। साची पूछो तो अै सात नंबर ई म्हारै अलटप्पू में आया हा। म्हैं पाठ्य पोथ्यां रेपिड रीडर अर कोर्स रीडर रै ना तो कदैई घरै हाथ लगायो अर ना ई सार्दुल स्कूल में पढती बगत ओमप्रकाशजी जोशी रै लेक्चर माथै ई ध्यान दियो। म्हारा कान अंगरेजी सुणनो बंद-सो कर दियो हो। केई बार माटसाब रो पंजो म्हारी कनपटी अर गुद्दी में ई पड़्यो। चपीड़ चिपण रो वो चिरमिराट तो थोड़ी ताळ सूं मिट जावतो पण अंगरेजी वाळो गिरगिराट तो आज ई कायम है।

परीक्षा में अंगरेजी रो पेपर हाथ में आवतां ई म्हैं सगळां सूं पैली 'अनसीन पेसिव' देखतो अर उणरै वैकल्पिक समेत वस्तुनिष्ठ सवालां रा उथळा ई अंदाजै सूं टीप देवतो। अनसीन पेसिव में जकी ई ओळ्यां सवाल सूं मेळ खावती वांनै ज्यूं री त्यूं उत्तर-पुस्तिका में उतार देवतो। कोई विलोम या बहुवचन सबद ई ध्यान में आवतो तो धर देवतो। उण बगत पंदरै नंबर रो ऑब्जेक्टिव (अे बी सी डी) पेपर ई होवतो। ऑब्जेक्टिव पेपर धोळै रंग रो होवतो अर सब्जेक्टिव पीळै रंग रो। धोळो पेपर देखतां ई म्हारा ध्यान धोळा होय जावता अर पीळियो पेपर आंख्यां साम्हीं आवतां ई मूंडो पीळो पड़ जावतो। ऑब्जेक्टिव पेपर में पैली चार सवालां रै आगै कोष्ठक में म्हैं 'बी' भरतो, उणसूं आगला चार सवालां रै उथळै में 'सी' अर पछै सगळां में आडैकट 'डी'। 'अे' किणी सवाल रै उथळै में नीं भरतो। म्हारो औ निजू अनुभव हो कै सही उत्तर 'अे' तो भूल्यो-चूक्यो ई होवै। इण भांत री कारस्तानी सूं ऑब्जेक्टिव पेपर में म्हैं पंदरै मांय सूं चार-पांच नंबर लेय पड़तो अर बाकी रा चार-पांच नंबर म्हनै 'अनसीन पेसिव' दिराय देवतो। फर्स्ट ईयर में सात नंबर अर सैकेंड ईयर में पचास मांय सूं नौ नंबर आया। पण पास होवण सारू तो अठारा नंबर लावणा जरूरी हा। फाईनल रो परिणाम तो अंगरेजी रो पेपर आंख्यां आगै आवतां ई साम्हीं पड़्यो हो। औ तय होयग्यो हो कै इण जीवण में तो किणी सूरत में बी.अे. पास नीं कर सकूं।

खैर! होणी नै कुण टाळै! होई सोई राम रचि राखा। जिण भांत लारलै दो साल अंगरेजी रो पेपर दियो, उणी भांत तीजै साल ई परीक्षा देय'र मूंडो लटकायां घरै आयग्यो। सोरा-दोरा दूजा पेपर ई पार पटक्या। जून महीनै में जद अखबार में बी.अे. फाईनल रो

रिजल्ट आयो तो बेमन सूं देखणो ई हो। म्हैं अर म्हारै डोळ रा ई म्हारा कीं बेली रिजल्ट सप्लीमेंटरी सूं देखणो सरू करता। जद थर्ड अर सैकंड डिविजन में ई रोल नंबर नीं लाधतो तो फर्स्ट डिविजन रो कॉलम देखण री जरूरत ई नीं पड़ती। म्हैं साव हतआस होय'र माथो पकड़'र बैठग्यो। बात फगत फाईनल रै रिजल्ट री नीं ही। अबै तो पाछो फर्स्ट ईयर में एडमिशन लेवण रो मोटो दुख हो। कैवै कै जद मिनख री आंख्यां में अंधारै रै कारण तिरवाळा आवण लागै तो बीच-बिचाळै अेकर चांनणो जरूर होवै। दोयेक घंटा पछै म्हारो अेक बाळगोठियो सहपाठी आय'र बतायो कै थारो रिजल्ट रोकीज्यो है, म्हैं खुद म्हारी आंख्यां सूं थारा रोल नंबर देख्या है। जिगरी भायलै री बात सुण'र पाछो अखबार देखण रो जिगरो जाग्यो अर म्हैं अचंभै सूं 'रिजल्ट विध हेल्द' में म्हारा रोल नंबर देख्या। अेकरको तो म्हनै भरोसो ई नीं होयो कै इयां कियां होय सकै? खैर, हरि करै सो खरी!

जुलाई रो महीनो बीतण मत्तै हो। कॉलेजां में नूंवा एडमिशन सरू होयां नै महीनो भर होयग्यो हो। म्हारो रोक्योड़ो रिजल्ट अजै तांई आयो कोनी हो। जद अगस्त रै पैलै हफ्तै तांई रिजल्ट नीं आयो तो म्हैं दाता देवकिशनजी राजपुरोहित (चंपा खेड़ी) री शरण में गयो। बियां तो म्हैं दो-चार दिनां में उणां रा दरसण-लाभ लेवतो ईज हो। उण बगत बीकानेर सूं ईज वांरो 'दैनिक प्रांतदूत' नांव सूं अखबार छपतो हो अर राजपुरोहित जी उण अखबार रा प्रधान संपादक हा। म्हैं दो-चार दिनां सूं अमूमन वांरी चौतीणा कुवा रै लारै आयोड़ी प्रेस में जावतो हो। उण दिन म्हैं सिंझ्या री बगत वांरी प्रेस गयो अर घणै संकै रै सागै म्हारै रिजल्ट बाबत उणां सूं बात करी। म्हैं वांनै बतायो कै म्हारै बी.अे. (फाईनल) रो रिजल्ट रोक्योड़ो है। आगलो शिक्षा-सत्र सरू हुयां नै सवा महीनो होयग्यो है, पण म्हारो रिजल्ट अजै तांई नीं आयो।

दाता म्हारै माथै रीसां बळता कैयो कै आ बात थूं म्हनै इत्ता दिन क्यूं नीं बताई? पछै कैयो, ''काल दिनूगै दस-इग्यारै बजी आय जाईजै।''

म्हैं दूजै दिन दस बजतां ई दैनिक प्रांतदूत रै दफ्तर पूगग्यो हो। उण बगत दाता देवकिशनजी री उमर पैंताळीसेक बरसां री हुवैला अर बीकानेर री पत्रकारिता में वांरो दबदबो हो। इणसूं पैलां वै उण बगत अजमेर सूं छपण वाळै ख्यातनांव अखबार दैनिक नवज्योति रा बीकानेर में 'ब्यूरो चीफ' रैया। दाता राजस्थान विधानसभा सूं छप्योड़ी अेक डायरी मांय सूं अजमेर विश्वविद्यालय रै वी.सी. (वाईस चांसलर) रा नंबर लिया अर दैनिक प्रांतदूत दफ्तर रै टेलीफोन सूं सीधो वी.सी. नै फोन खड़काय दियो। उण बगत वी.सी. कोई मेडम हा। वांरो पी.अे. फोन रिसीव करियो। दाता आपरो परिचै बीकानेर सूं दैनिक प्रांतदूत रै संपादक रै रूप में दियो तो पी.अे. तुरंत मेडम सूं बात करवाई। दाता वी.सी. मेडम नै पूरी डिटेल दी, तो मेडम विश्वविद्यालय में पूछताछ करयां पछै जबाब

देवण रो कैयो। दोयेक घंटा पछै दाता तो फेरूं फोन मिलायो। वी.सी. मेडम जाणै उणां रै फोन नै ईज उडीकै ही। म्हनै वांरी आपसरी री बात तो नीं सुणीजै ही, पण बातचीत में जद गरमागरमी होई अर दाता कीं रीसां बळता जोर सूं बोल्या, ''... तो मेडम! एक बात बताइए कि .....का दंड फकीर क्यों भुगतै?'' इत्तो सुणतां ई वीसी मेडम फोन काट दियो। दाता रै साम्हीं बैठ्यो म्हैं ई घबरायग्यो हो।

फोन कट्यां पछै दाता होळै-होळै कीं 'नॉर्मल' हुया अर म्हनै नैछै सूं बतायो, ''थारी अंगरेजी विसय री कोपी विश्वविद्यालय स्तर माथै कठैई गमगी है। खाली थारी कोपी ई नीं, और ई कीं विद्यार्थियां री कोप्यां गायब है। कोपी मिल्यां ई रिजल्ट घोसित करीजसी। पण थूं चिंता मत कर। काल फेरूं वी.सी. मेडम सूं बात करूंला, थारै साम्हीं ई करूंला। थूं काल दिनूगै टैमसर आय जाईजै!'' दाता नै ध्यान नीं रैयो कै आगलै दिन अतीदवार है। विश्वविद्यालय में छुट्टी ही। म्हैं प्रेस गयो अर बेरंग आयग्यो। बियां ई म्हारै कनै अबार इण टाळ कोई काम कोनी हो। म्हैं सोमवार नै फेरूं दाता री शरण में पूगग्यो। पूगणो ई हो। म्हारै भविस रो सवाल हो। दाता लगैटगै साढी इग्यारै बज्यां फेरूं अजमेर विश्वविद्यालय रै वी.सी. चेंबर में फोन मिलायो। पी.ए. उठायो। वै बतायो कै मेडम थोड़ी देर पछै बात करैला। दाता अबै इण मामलै नै आपरो 'प्रेस्टिज पाइंट' बणाय लियो हो। वै तो आधेक घंटै सूं फेरूं फोन खड़कायो। अबकाळै वी.सी. मेडम दाता देवकिशन जी राजपुरोहित नै जकी बात बताई अर इण दरम्यांन उणां रै चेहरै माथै जका राजी-बाजी रा भाव देख्या तो म्हारा ई कान खड़ा होयग्या। लगैटगै दो-तीन मिनट री उण बंतळ रो सार औ हो कै विद्यार्थी शंकरसिंह राजपुरोहित री अंगरेजी री कोपी (उत्तर-पुस्तिका) मिलगी है अर पूर्णांक पचास मांय सूं तियांळीस नंबर आया है। वी.सी. मेडम दूजा सगळा विसयां रा नंबर ई दाता नै फोन माथै ईज बताया, जिणां नै वै नोट करता गया अर मार्क-शीट रजिस्टर्ड डाक सूं हफ्तै भर में पूगण री बात कैयी। फोन कट्यां पछै दाता रै मुळकतै मूंडै सूं आ बात सुण'र म्हारी बाछां खिलगी। म्हैं आज तांई अचंभै मांय हूं कै सौ मांय सूं अंगरेजी विसय में 29 नंबर हासल कर'र ग्रेस सूं पास होवणियै टंटाटेर रै पचास मांय सूं 43 नंबर कियां आयग्या! दरअसल उण साल हिंदी विसय में म्हारै पचास मांय सूं बयांळीस नंबर आया हा, पण म्हारै जीव रो जंजाळ बण्योड़ी अंगरेजी अनिवार्य में उणसूं ई अेक नंबर बेसी आवणो म्हारै सारू किणी चमत्कार सूं कम नीं हो।

इण रिजल्ट सूं चारेक महीनां पैली अखबार में अेक 'बॉक्स खबर' जरूर पढी ही कै हरियाणै री सींव लागतै राजस्थान रै बगड़ कस्बै मांय अजमेर विश्वविद्यालय री उत्तर-पुस्तिकावां री जांच करती बगत उणां मांय सूं कीं उत्तर-पुस्तिकावां अेक भैंस आपरै उदरस्थ करली ही। मतलब वा भैंस कोपियां रो आपरै मूंडै सूं गबळको कर लियो हो।

दरअसल, इण अणहोणी घटणा में होयो इयां कै कोप्यां जांचणिया लेक्चरर साब बंडळ बारै टेबल माथै ई छोड'र घर में चाय लेवण सारू चल्या गया हा अर पाछा बाखळ में बावड़्या जित्तै कीं कोप्यां जांचण रो काम वांरी दुधारू भैंस कर लियो हो। भरोसै री भैंस पाडा लावै, पण म्हारै औ बैम आज तांई बण्योड़ो है कै कांई कोप्यां रो वो बंडळ अंगरेजी रो हो? कठैई म्हारी अंगरेजी री कोपी तो उण भैंस माता रै भेंट नीं चढगी? जे साच्याणी इयां होयो, तो वा भैंस म्हारै सारू साख्यात देवी ई समझो। खैर कीं होवो, पण इत्तै बडै चमत्कार नै तो नमस्कार करणो ई पड़ै। अठै दाता देवकिशनजी राजपुरोहित नै बारंबार निवण करणो ई कियां बिसराईजै, जिणां रै अखबार रूपी चक्कै अर विश्वविद्यालय रै धरम-धक्कै सूं बी.अे. फाईनल री आ दुरगम घाटी पार पड़गी। औ पड़ाव पार करियां पछै ईज आगै जाय'र मातृभासा राजस्थानी में अेम.अे. पैलै दरजै सूं पास करण रो सौभाग मिल्यो अर वो ई स्वयंपाठी छात्र रै रूप में सोनै रै तुमगै सागै, जिणनै अंगरेजी में 'गोल्ड मेडल' कैवै।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

पूर्ण शर्मा 'पूरण'

छियां-सो कीं

सामली ताई ई कैवता सगळा। ठाह नीं क्यूं? अलबत्त बांरो घर म्हारलै घर रै तो साम्हीं हो, पण सगळै बास रै तो साम्हीं कोनी हो? फेर ई ताई पूरै बास री सांमली ताई ही अर सावळ कैवूं तो बास री ई नीं पूरै गांव री सांमली ताई ही। बियां सांमली ताई नांव कोनी हो बीं रो, बो तो बस बैक हो। नांव तो ताऊ रो ई अैक-बैक हो। लोग 'सुल्तान' कैवता-कैवता ठाह नीं कांई-कांई कैय देंवता, पण ताई नै सांमली ताई ई कैवता सगळा। आ कोनी कै ताई नै ठाह कोनी हो कै लोग बीं खातर कांई कैवै, पण ठाह हुवो भलांई, ताई रै कोई फरक कोनी हो। ताई रै तो ईं बात रो भी फरक कोनी हो कै सांमलो बात कांई कैय रैयो है। समूळी बात ताई रै कदेई पल्लै ई कोनी पड़ती... बस ताई नै तो साम्हीं सूं कोई अेक टप्पो सुणीजतो अर ताई सरू...। इन्नै-बिन्नै अर ठाह नीं किन्नै-किन्नै री बातां हुंवती ताई कनै। बातां ई बातां। बियांस ताई नै सावळ सूं टप्पो सुणतो ई कठै हो? दिल्ली ऊंचो सुणती। ऊंचो सुणतो पण ताई नै तो बस बात रो नुग्गो चाईजै हो। नुग्गो हाथ लाग्यो नीं अर ताई गरणेट चढायो नीं। हाथ सूं हाथ थामती ताई री बातां मत्तैई आगै सूं आगै बध्यां जावती... ताई खुद भी। बातां आगै अर ताई लारै। जाणै भाजती भैंस लारै लाठी लेय भाजती हुवै। ऊपरसांसा। हम्बै... बातां करती ताई ऊपरसांसां हुय जावती। केई ताळ तांई तो ताई सप-सप करबो करती पछै उतावळी ई जोर चढ जावती। ताई रो सुर ऊंचो हो। स्यात ताई नै ऊंचो सुणतो हो, ईं खातर। कठैई भीतर औ भाव हुंवतो हुयसी कै सांमलै नै ई ऊंचो सुणीजै...। कुण जाणै? ताई तो कदेई बतायो कोनी।

:: ठिकाणो ::
वार्ड नं. 5, रामगढ़
तहसील-नोहर
जिला-हनुमानगढ़
राजस्थान-335504
मो. 9828763953

बास रै सगळा टाबरां रो लाड करती ताई। सैंग रा सैंग ताईआळी बाखळ मांय ई गदमचक्का करता... पूरै दिन पण ताई नाक सळ कोनी घालती। टोरो लागतो तो गिंडी बाखळ नै छेकती आंगणै तांई जा पूगती तो रोटी पोवती ताई बिचाळै ई ऊभी हुंवती अर गिंडी नै ओजूं बाखळ कानी रूड़ा देंवती। इयां करतां ताई री आंख्यां मांय भी कीं रुड़ जावतो अचाणचक। माटी री परात मांय ओसणेड़ो आटो करड़ो हुय जावतो, पण ताई री कचकोळ्यां-सी आंख्यां मांय रुड़ती गिंडी-सो बो मोड़ै तांई रुड़बो करतो।

गिंडी किसी अेकर आवती... ओजूं उछळ आवती, पण ताई रै कोई फरक कोनी पड़तो। गिंडी उछळती तो कदे रसोई री छात माथै जा पड़ती तो कदे न्हावणघर मांय। ताई न्हावणघर मांय न्हावती हुंवती, पण ''अे रे... ल्यो...'' ताई हाथूंहाथ गिंडी नै बारै उछाळ देंवती। टाबर भी कांई करै? और खेल ई तो कोनी हा बां कनै। घूतो-गिंडी अर मारदड़ी... का पछै लाला-लित्तर अर लुकमिचणी... बस, अै ई खेल हा। क्रिकेट-कारकेट बां दिनां हा ई कोनी। कबड्डी तो हुंवती, पण छोटा टाबर किस्या कबड्डी खेलै हा। अेक ई अेक खेल सूं खेलता धाप जावता तो कदे-कदे दो खोरियां रा ठीया जचावता अर पाणो-गिंडी खेलण लागता। हां, खेलता बठै ई। पाणै-गिंडी खातर भी कठै जावै? खेलणै री जिग्यां तो बठै ई ही। ताई आळै घर साम्हीं गळी मांय अर का ताईआळी बाखळ मांय। बाखळ चौड़ी तो कोनी ही, पण लांबी खूब ही। चीकणै ताल बरगी जमेड़ी न्यारी। छुट्टी आळै दिन तो पूरै दिन खेलबो करता टाबर। टाबरां नै खेलतां देख'र कोई बडो भी आय जावतो बाखळ मांय। टाबर री दादी का पछै आपरै टाबर नै बुलावणै खातर कोई बीनणी। ताई रा तो आगड़ा ठाठ हुय जावता।

''छोड बात थूं...।'' ताई आपरै तकिया कलाम सूं सरू हुंवती तो पूरी री पूरी रामायण सुणा देंवती सांमलै नै। केई दिनां रो भेळो हुयेड़ो अलेवण अेक समचै ई सूंप देंवती आगलै नै।

''ताई रै पेट मांय ब्होत बात है।''

''पण खटावै तो कोनी।''

''ताई साथै तो बग्गू नाई आळी हुय रैयी है रांडो...।''

अर ताई रै परपूठ लुगाइयां दे-दे ताळी हांसबो करती।

ताई री आंगणवाई भीतर नै ही। गळी माथै तो घर रो बारणो ई खुलतो बस। बारणै सूं लेय पूरै अेक प्लाट लांबी नाळ-सी बाखळ ही। बाखळ रै पछै घर हो... आंगणो हो। आंगणै सूं चिपतो ई हो छपरो। छपरो मतलब... ताऊ अर ताई री बैठक। बैठक कैय देवो चायै खेत। असल मांय छपरो बांरो खेत ई हो। खेत जको पेट भरै। छपरो ई पेट भरतो बांरो। ताऊ बोरा बणावतो हो। जट रा बोरा। बां दिनां ऊंट री जट रा बोरा घणा चलत मांय हुंवता। बियांस बकरी री जट रा भी हा, पण अठै सोतर मांय ऊंट बेसी हा, घोनो घट।

घोनो बियां ई जाटू धन कोनी मानीजै। जाटू तो भैत ई हुवै। म्हैं अलबत्त आं बातां नै जाणतो कोनी, पण जद छपरै मांय बैठ्यो हुंवतो तो खड्डी री खट-खट बिचाळै ताऊ घणी सारी बातां बतायां जावतो। आपरा कंधोळा ऊंचाय-ऊंचाय'र ताऊ बोरो बणतो जावतो अर लगोलग म्हारै सूं बतळावतो जावतो। ताऊ बियां तो घट ई बोलतो, पण जद खड्डी माथै हुंवतो तो जाणै ताऊ रै मूंडै सूं बोल मत्तैई झरबो करता। घणी सारी बातां ताऊ मत्तैई बतायबो करतो। कीं म्हैं ई पूछबो करतो। ताणै मांय पेटै आळी पिंडी घालतां ताऊ री फुरती देखबो करतो अर ताऊ नै कीं ना कीं पूछबो करतो। ताऊ नै पुरसल सुणतो तो कोनी, पण म्हारै हाथ अर होठां री हरकत सूं अंदाजो लगावतो ताऊ।

''औ पसवाड़लै पासै थे मोटी तांत रो तागो कियां घाल्यो है ताऊ?''

सरड़-सरड़ बधतै बौरै रै म्हैं हाथ लगावतो तो ताऊ समझ जावतो अर बतावतो, ''आ कानी है लाडी। कानी जित्ती मोटी हुवै, बोरो बित्तो ई तकड़ो बणै।''

ताऊ आपरी मुट्ठी भींचतो अर बात साथै सैन सूं समझावतो तो लागतो जाणै जिनगी रो कोई ऊंडो फलसफो समझावतो हुवै। ताऊ जद बात करतो तो म्हैं बीं री मुहाळ कानी देखतो। सांयत अर धीरू मुहाळ। किणई दरवेस दांई।

ताऊ-ताई रै अेक बेटो हो अर दो बेट्यां ही। घर भर्‌यो-भर्‌यो सो हो। बेटो अमरो म्हारै सूं पांच-छह साल बडो ई हो। रिस्तो आयो तो परणा दियो। घरां बीनणी आयी अर घर कीं और भरग्यो। साल खंड घरां बीनणी रैयी इत्तै तो ताई रै पांख लागी रैयी। बीनणी आगै मसीन बणी रैवती ताई। सगळो काम आप करती। बीनणी नै हाथ ई को लगावण देंवती। गुणमुण-गुणमुण करती ताई पूरै दिन खटबो करती। बीनणी साळ मांय ढोलियै माथै सूती रैवती अर ताई आंगणै मांय काम लागी रैवती, पण ताई री आंख्यां मांय थकेलै रो अेक तासू तकात कोनी हुंवतो। कारो करता बास रा टाबर बारै बाखळ मांय गिंडी रुड़ाबो करता अर... अर ताई री आंख्यां मांय ऊन रो गिंडियो रुड़बो करतो।

बीनणी अर अमरो उडीकै ई हा जाणै। साल ई कोनी नीसरण दियो। केई दिन तो बां आंटा-बळेडा-सा लिया, पण छेकड़ न्यारपणो साध लियो। ताई री कचकोळ्यां-सी आंख्यां मांय रुड़तो ऊन रो गिंडियो अचाणचक ई उधड़ग्यो। पछै तो उधड़ेड़ो गिंडियो लेयां फिरबो करती ताई... चुपचाप। बियांस बोलती बगती तो बोलती बगती, पण दुनिया-झ्यान री बातां बिचाळै ओचट अेक भिचकी-सी लागती अर ठीक ईं बगत ई ताई रै अळूझ-पळूझ चेंरै कानी कोई देखै तो देख सकै... तार-तार हुयेड़ो... सो-कीं।

बेटो-बीनणी गया तो ताई रै भीतर जाणै कित्तो कीं रीतग्यो हो, पण फेर ई घर भर्‌यो-भर्‌यो सो ई हो। आंगणै मांय बेटी हुवै इत्तै घर रै ठाड हुवै अर ताई रै आंगणै तो दो-दो बेट्यां ही अजै।

''बेटी हुवै इत्तै सो-कीं है...।'' मन मांय सोचती ताई ठाह नीं क्यूकर-सी हुयगी ही बीं दिन, जद बेटो-बीनणी आपरो सामान लदै हा। बियां तो बै किस्या न्यारी भांत न्यारा हुवै हा। औरां रै तरियां ई केई-केई दिनां तांई ओला-छाना करता रैया हा दोनूं। कदे कीं ऊळावो लेंवता अर कदे कीं।

''आज आसंग कोनी म्हारी, खेत कोनी जावूं।''

''आज पेट दुखै।''

ऊळावो ना हुवै तो ई, बेटै-बीनणी री फूलेड़ी निजर छानी कोनी ही ताई सूं अर फेर लुगाई रा फफड़ा तो लुगाई जाणै ई है? हां, ताऊ नै कीं ख्यांत कोनी हो, पण ताई तो केई दिनां सूं देखै ही। भातै तांई जाण'र पड़्यै रैवणै रो साफ मतलब समझै ही ताई। बीनणी कारू ही का नीं ही, सावळ सूं ताई जाण ई कोनी सकी नीं, पण बीं रो आपरो जामेड़ो तो छानो कोनी हो ताई सूं। ब्याह हुयां पछै क्यूं, पैलां किसी फळी फोड़तो हो बो। पड़्यो रैंवतो पळगोड। सरू-सरू मांय तो ताई कैयबो करती, पण कैयै रो कीं असर कोनी हुंवतो। ताई री कचकोळ्यां-सी आंख्यां मांय अेक छियां-सी तिर आवती अर पूठी गम जावती। पूरो गाम आवतो बोरा बणावण नै... ''सुल्तान...ऽ... घरां हो कांई?'' ताई माची माथै सूत्यै अमरै नै खड़बड़ावती, ''जा थारै बापू नै कोई हेलो मारै।'' आळसेड़ो अमरो ''आं...ऊं...ऽ...'' करतो इत्ती ताळ मांय तो हेलो मारणियो ओजूं हेलो मार देंवतो, ''सुल्तान... ओ सुल्तान...?'' हेलो ओजूं सुणतो तो जाणै ताई रै भीतर कठैई अणजाण घट्टां मांय गूंजतो, ''अमरा... ओ अमरा?'' पण अमरै नै कुण हेलो मारै, ताई सूं किस्यो छानो हो ना। खेती ही कोनी अर बोरां रै बो लागै कोनी। स्कूल रै तो साम्हींकर ई कोनी टिपेड़ो। काम बिना कुण लेवै नाम? पूरो गाम आवै घरां, पण अमरै भलां ई तो कुण ई कोनी आवै। हेलां माथै हेला आवै तो छेकड़ ताई नै ई किंवाड़ खोलण खातर जावणो पड़ै। कदे-कदे तो ताई सोचै कै पड़्या रैवण देवूं नीं खुल्ला... पण खुल्ला खटावै तो कोनी। टाबर खेलै इत्तै तो भलांई, पण दुपारी मांय डांगर तो सेकबो करै... ढळ्यै तांई।

बैं-बैं करण आळी ताई पूरै गाम मांय बाजींती ही, पण घरां कीं कोनी बोलती। बोली तो बीं दिन ई कोनी ताई जद बीनणी आपरो सामान टाळ-टाळ नै गाडै मांय घालै ही। ताई कानी देखबो करी, कीं कोनी कैयो बीनणी नै। बीनणी नै कांई कैवै ही, आज तो ताऊ साथै ई सप-सप कोनी करी। घामघूम-सी छपरै मांय बैठी रैयी, ताऊ कनै। अमरो अर बीनणी चुग-चुग'र सामान टाळै हा। दायजै मांय आयेड़ो अर घरां बपरायेड़ो, दोनूं ई। आपी टाळै हा अर आपी घालै हा। ताई टुगर-टुगर देखै ही, अबोली। अलबत्त दोनूं भैणा ई लाग रैयी ही, भाभी नै टाळेड़ो सामान झलावै ही।

पिकअप टुरण नै त्यार ही। अमरो जावतो-जावतो पूठो मुड़्यो अर छपरै मांय आयो। अमरै नै आवतो देख ताऊ अड्डै सूं ऊभो हुयो अर बेटै रै सिर माथै हाथ धर्‌यो।

पिळांसी आंख्यां मांय सील उतर आयी। अमरो मसीन दांई ताई रै पगां लाग्यो अर बिना कीं बतळायां ई पिकअप कानी चाल पड़्यो। बीनणी नै केई ताळ हुयगी ही पिकअप मांय चढी नै। ताई इकलंग बीनणी कानी जोवै ही, पण बीनणी अेकर ई कानी कोनी देख्यो।

''म्हैं तो इस्यो कीं कैयो ई कोनी आज तांई ?'' ताई मनोमन सोचै ही।

''थूं कोनी कैयो जद ई तो बात है।''

''... ... ?''

''थूं आपरै मूंडै सूं तो न्यारो हुवण री कैवण सूं रैयी, पछै कांई उडीकै ही बीनणी ? जको कीं करणो हो, बो तो आपोआप ई करणो हो, कर लियो।''

''पण म्हैं तो अलीफ री बे ई कोनी कैयी... हथेळियां मांय थुकावै ही ?''

''न्यारो हुवण रो ओ अेक ई कारण हुवै ना ?''

''... ... ?''

''दो-दो बेट्यां कंवळै लागी खड़ी है... जाणै कोनी थूं ?''

पिकअप कदेन री ई गयी परी, पण ताई सोपै तांई अळोचती रैयी... अळोचती रैयी। ताऊ नै तो खैर कांई कैवै ही ताई, सोच्यो, ''आं रो मन क्यूं काचो करूं... ।''

अमरो गाम रै अगूणै पासै प्लाटां मांय जाय'र बस्यो हो। सरू-सरू मांय तो बीनणी रै भकायां कोनी आयो, पण पछै आवण लाग्यो। पछै रै दिनां मांय कदे-कदास बीनणी भी आय जावती। ताई घरां आयेड़ी बीनणी नै आसीस देंवती। थोड़ी-ब्होत इन्नै-बिन्नै री बतळावती, पण खास बढका कोनी पाड़ती। ऊन रै उधड़ेडै गिंडियै रो कोई तार इयां ई आंख्यां साम्हीं तिसळ आवतो। पूछण रो जी करतो, पण पूछीजतो कोनी। पूछै किणनै ? बीनणी मरोड़ मांय आवती अर मरोड़ मांय ई पूठी बग जावती। न्यारो हुयां पछै गामै साल खंड ई और रैयो हुयसी अमरो, पछै तो बीनणी आपरै पीहर मांय खेंच लेयगी। अठै किसी जोळ ही। खेती तो तीजियै ई बाहणी ही, बठै बाहली।

बगत बीत्यां दोनूं बेटियां परणाईजी। ब्याह मांय बेटो आयो हो अर बीनणी ई। अजै सूनी गोदियां ही। ताई आंटो लेय'र पूछ्यो तो सरी, पण बीनणी कीं कोनी बतायो। आठ-दस दिन रैया दोनूं अर गया परा। हुयग्यो फरज पूरो। बेटो-बीनणी गया अर बेटियां ई गयी। बेटियां आप-आपरै घरबार री हुयगी अर घरां अब ताऊ-ताई हा... का छपरो हो।

पाकती ऊमर ताऊ नै कीं और ई बोळो कर दियो हो... अबोलो भी। ताऊ अबै लगटगै चुप ई रैवतो अर और तो और, घर सूं नीसरणो ई छोड दियो हो ताऊ। कोई बोरै खातर घरां आयेड़ो माणस कीं बतावतो बा थोड़ी ब्होत पल्लै पड़ती ताऊ रै, बाकी तो ताऊ आपोआप ई जचा लेंवतो, मांय ई मांय। बस इत्ती-सी दुनिया रैयी ही ताऊ री। हां, ताई री दुनिया अबै ई छपरै सूं बारै ही। बास मांय अर बास सूं ई आगै फळसै तांई। गाय री सार-संभाळ अर रसोई रो काम साम्यां पछै ताई बेहली ई हुंवती। जावती-जावती अेकर

छपरै मांय पग-मोड़ो सो करती अर पछै बारै नीसर जावती। कदेई म्हारलै घरां अर कदे किणई और रै घरां। बास घणो ई ठाडो हो अर ताई खातर तो घणी ई जग्यां ही। दुपारी री बेल्ह मांय ''अरे... छोड बात थूं'' रो रस लेवण खातर बास री सगळी लुगाइयां उडीकबो करती ताई नै।

ताई कनै ब्होत बातां ही, ब्होत समाचार हा। म्हैं सोचतो—इत्ती सारी बातां, इत्ता सारा समाचार कठै जचायां राखै ताई। पूरो-सूरो सुणै तो है ई कोनी! जाबक ऊंचो सुणै। ताऊ सूं तो कीं सावळ सुणै, पण है तो बोळी ई? ताऊ ई बोळो अर ताई ई बोळी। दोनूं बोळा। बोळो पूछै बोळी नै... कांई रांधां...? छपरै मांय ताऊ-ताई नै बतळावता देख'र म्हैं मन ई मन सोचतो अर मुळक पड़तो। पछै सरम आवती आपरै सोचेड़ै माथै... अैड़ो नीं सोचणो चाईजै।

हेत हो ताऊ अर ताई रो। दोनूं बिना बोल्यां ई पूरो दिन अेक साथै बैठ्या टिपा देंवता। सगळै दिन 'बड़-बड़' करती ताई रै ई कांई हुंवतो कदे-कदे ठाह नीं। घर सूं बारै ई कोनी नीसरती। पूरै दिन ताऊ कनै बैठी रैवती। अलाह-सी ताऊ री मुहाळ कानी तकबो करती... तकबो करती। ठाह नीं कांई हुंवतो बीं बगत ताई री आंख्यां मांय... जाणै समूळो वजूद अबै आंख्यां मांय ई हुंवतो ताई रो। कदे-कदे लागतो जाणै कोई छियां-सी तिरबो करै ताई री आंख्यां मांय। कंवळी-सी... अर झीणी-सी। ...पण किण री? अमरै री... का... का...?

कातेड़ी जट नै पिंडी माथै अटेरती ताई अेकर-अेकर ताऊ रै मूंडै कानी जोवती अर पछै ओजूं आपरै काम मांय लाग जावती। ताऊ री आंगळ्यां अर खोवा नाचबो करता ... ताणै अर पेटै री देही माथै। कदे-कदे इयां हुंवतो कै ताऊ कोई अेक टप्पो कैय देंवतो अर पछै ताई बीं नै साम्ह लेंवती। अेक सूं अेक जुड़ती ठाह नीं कित्ती सारी बातां सुणा देंवती ताऊ नै। होळै-होळै। ताऊ रै पल्लै कीं कोनी पड़तो, पण ताई तो आपरो आफरो उतार लेंवती। रही-सही कसर बारै काढ लेंवती।

खुल्ली बोलती ताई। अलबत्त सरू तो सप-सप सूं ई करती, पण पछै गेड़ चढ जावती... पांचवैं सुर तांई। पण औ पांचवो सुर लोगां खातर ई हो, ताऊ खातर नीं। ताऊ साथै बतळावती ताई न्यारी हुंवती। गुरबत करती आ ताई ''अरे... छोड बात थूं'' कैवती सांमली ताई सूं अळगी हुंवती। गोडा अर मोडा नचावतो ताऊ अर सप-सप करती ताई... कोई देखणियो, देखबो करो भलांई। कदे-कदे बोंरै री उतावळ हुंवती तो ताऊ रै हाथां रो कमाल देखण आळो हुंवतो। पिंडी सरकावता थकां जित्ती जोर सूं ताणो उछळतो बीं सूं कित्ताई जोर सूं ताऊ रा कंधोळा उछळता अर पेटै री पिंडी झट ईं पासै सूं बीं पासै जा नीसरती। आंख फरूकै इत्ती ताळ मांय तो पिंडी ओजूं ताणै री ऊपरली ताण छोड'र हेठै री ताण मांयकर सागी ठौड़ आ पूगती। ठीक ईं बगत ई ताई सप-सप करती आपरी कोई

अेक बात पूरी करती अर बोरै कानी माथै जोर सूं हत्थो मारतो ताऊ मुळक पड़तो। कदे-कदे ताऊ आपरा हाथ थामनै कीं गौर सूं सुणतो।

सुणतो?

हैं...हैं...हैं... और कांई कैय सकां? ताऊ नै तो कोनी सुणतो, पण ताऊ तो सुणतो ई हो।

बारै सूं कोई हेलो पाड़तो, ''सुल्तान...सुल्तान ऽऽ...।''

पोळी माथै अधिया किंवाड़। हेलो सीधो आंगणै मांय पूगै। पण ताऊ रै कानां मांय कोनी पूगै अर ना ई सप-सप करती ताई रै। ताऊ लाई नै इयां ई घट सुणै अर इस्यै मांय ताई री बातां? सुणै कियां? इत्ती ताळ सूं भेळी हुयेड़ी बातां, सैंग री सैंग ताऊ रै बारकर घेरो देयां ऊभी हुवै। सगळी री सगळी, अड़ोअड़। ताई री बात सुणै तो कोनी, पण मांय बिचाळै ताऊ अेकर ताई कानी देख लेवै अर मुळक पड़ै। ताई रा हालता होठां रा बोल कानां तांई कोनी पूगै, पण ताई रै हालता होठां री हरकत पूगै... आंख्यां तांई। अेकर मुळक्यां पछै ताऊ जाणै सो-कीं भूल जावै अर पूठो ताणै-पेटै मांय अळूझ जावै... निमोही-सो। जाणै कनै कोई कोनी।

ताई आपरी धुन मांय बोल्यां जावै... बैल्यां जावै। इल्ली-बिल्ली सगळी कर धापै, पण ताई री बात कोनी मुकै। खेत-क्यार री बातां, डांगर-ढोर री बातां, बास-गळी री बातां... बातां ई बातां। अचाणचक कोई लुगाई रो जिकर आवै अर ताई, ताऊ खातर चिंत्या करै। चिंत्या करै तो ताई रो सुर और भांत रो हुय जावै।

''...थे क्यामी जाया करो बनवारियै आळै घरां? पूरै गामै ऊगी हुयरी है... नागी रांड है बा... काळो चेप देयसी... आपणै तो पासो देयां राखो...।''

समझाइस करती ताई अेकर ताऊ कानी देखै अर पछै सुर कीं और मंदो करती समझावै, ''स्याणो ख्यांत राखियो...।''

''सुल्तान... ओ सुल्तानऽऽ...।'' अधिया किंवाड़ां ऊपरांकर हेलो लगोलग आवै। हेलो पाड़णियो बेली आखतो हुय जावै, पण जोर कोनी। ठाह है कै सुल्तान बोळो है। सुणै कोनी, पण बीं बरगो बोरो कोनी बणावै कुणई। घुटवां बणत रो बोरो अंधेरै मांय पिछाण लेवो भलांई, ''ओ तो सुल्तान रो बणायेड़ो है।'' सगै रो समाचार आयां नै केई दिन हुयग्या। आईज्यो ई कोनी। दो बोरां री जट पड़ी ही घरां। आज टैम लागी तो ल्यायो हो, पण औ किंवाड़ तो कोनी खोलै? सुल्तान तो कोनी सुणै जको कोनी सुणै, पण बा बोळती ई कोनी सुणै? हेलो पाड़णियो बेली मांय ई मांय फळीबंट हुवै, पण बीं रै सवालां रो पड़ूत्तर कुण देवै।

''सुल्तान... ओ सुल्तानऽऽ...।''

''सुल्तान... ओ सुल्तानऽऽ...।''

हेलै माथै हेलो मारीजै। अधिया किंवाड़। किंवाड़ां री बीणी पकड़'र मचकावै बो... कदे कूंटो बजावै, पण कोनी सुणै जको कोनी सुणै। अखतायेड़ो बो ओजूं हेलो मारै।

''सुल्तान... ओ सुल्तानऽऽ...।'' अर पैलां पूगेड़ा हेलां रै लारै अेक और हेलो जाय ऊभो हुय जावै। ताऊ रै कोई फरक कोनी। फरक ताई रै ई कोनी। सुणण नै तो ताई नै कीं बेसी सुणीजै, पण ताई नै सुणणै री बिरिया तो कोनी। ताई रा समाचार नीवड़ै तो ई बिरिया मिलै नीं।

''असलमियै री बीनणी सलामूड़ै साथै मोटरसाईकिल माथै चढी बगै ही...।''

''धरमलै री छोटोड़ी छोरी सतमासियो जाम्यो है...।''

'राजूड़ै री भैंस मरगी.... भैंस कांई मरगी, लाई रा टाबर ई रुळग्या। ले-देय'र इत्तो ई तो आसरो हो... बो ई खोस लियो रामजी...।''

''बो रूपो कोई माणस है?...भाण-बेटी कीं कोनी लागै बीं रै... मरज्याणो पीठ तकै...।''

''रेंवतियै काल छोरो परणायो जद तो काख पीटै हो अर आज बीनणी नै खायां ई कोनी धापै...।''

''ना ओ लुगाई री किसी जिनगी हुवै... ईं नांव सूं तो पगआळी जूती ई आछी... पैहरणियो मेर तो करै...।'' ताई री बातां चालती रैवै... चालती रैवै।

''सुल्तान... ओ सुल्तानऽऽ...।'' बारला बोल अबै कीं आकरा हुवण लागै।

ताई नै कीं बैम हुवै। कान मांडै। अधिया किंवाड़ां साम्हीं खुरहो करतो भाइड़ो धापग्यो। धापेड़ा बोल अबकै सुर बदळ लियो... ''सुल्तान... ओ सुल्तान ऽऽ... अरे ओ बोळियाऽऽ...।''

रीस मांय नीसरेड़ो हेलो अबकै गोळी दांई पूगै अर पैलां रै ऊभा हेलां नै छेकतो सीधो ताई रै कानां मांय जा लागै।

''बोळिया... ओ बोळियाऽऽ...।'' ताई चिमकी। ताई नै चिमकता ताऊ ई देख्यो। ताई नै ताचकेड़ी देख ताऊ सो-कीं समझग्यो। बण आपरै हाथ री पिंडी बगायी अर उतावळी-उतावळी बारलै बारणै कानी हुय लियो।

ताई नै हेलै रा टप्पा तो पूरा-सूरा कोनी सुणीज्या, पण हेलो तो सुणीज्यो ई हो। ताई हेलो सुण्यो अर पछै आपोआप सूं ई बोली, ''कोई हेलो मारै...।' '

ताई बारै जावतै ताऊ कानी ख्यांत्यो अर ओजूं सरू हुयगी, ''लोग हेला मारै... सुल्तान घरां हो कांई... पण आंनै कांई मारै... हेला तो आं रै काम नै मारै...।''

बैलतां थकां ताई री कचकोळ्यां-सी आंख्यां मांय जाणै कुणई हेलो दुसरावै हो, ''अमरा... ओ अमरा ऽऽ... घरां है कांई...?''

◆◆

डॉ. अनिता वर्मा

पेमली

विधाता को न्याव ऊंकी मन मरजी सूं ई होबू करै छै। ऊंकी लीला अपरंपार, कुण समझ सकै। लोगदनी खेवै छै। चावै जतनो कोसिस कर ल्यो, पण बेमाता न जै करम में मांड द्यो, मटायां न मटै। जतना फोड़ा भाग में लिख्या छै, अतना तो भुगतणी ई पड़ै, फेर हंस'र दन काढो कै रोय'र काढो, कुण कै फरक पड़ै छै।

पेमली की कहाणी बी अस्यी छै—आकास की पटकी अर धरती माता नीं झेली। नांव छो प्रेमलता, पण गांव का संदा मिनख ऊंनै पेमली ई कैवै छा, यो ऊंको परेम को नांव छो, जिंनै सुणतां ई वा भागी चली आवै छी। कदी तो सोचणो पड़ जावै कै बैमाता न अस्या मनख बी आज का जमारा में घड़ मेल्या छै। कोई सूं कांई शिकायत कोनी अर कस्यी शिकायत जाणै कांई भान ई कोनै छो पेमली कै तांई। बालपण सूं अभागी छी पेमली। जनमता ई ऊंकी मां सुरग सिधारगी अर बाप नै दारू पीबा सूं ई जक कोनी पड़ै छी। जीं दिन ऊंको जनम होयो, मां रुकमी ऊंनै जनम देय'र सुरग सिधारगी। आस-पास का पड़ोसी भेळा होयग्या। नान्हो जीव अर ऊंको दारूड़्यो बाप छो। कोई संभाळबा हाळो रस्तेदार घर में कोनै छौ। ''अे रामजी! कस्यो संकट आण पड़्यो?'' पेमली का मामा-मामी बोल्या छा। वै बैन की सुणतां ई गांव आण पूग्या छा।

''अब कांई होवैगो... कस्यां पार पड़ैगी यो नान्हो जीव बना माई का दूध कै कस्यां जीवैगो?'' लोग-लुगाई आपसरी में बोलबा लाग्या छा। पेमली का मामा न नन्हा जीव कै तांई अपणी घरहाळी कै तांई सूंप दी छी। ऊंकै अेक महीना पैली ई छोरो पैदा होयो छो। ''ईंनै बी दूध पा दै।'' मामो, मामी सूं बोल'र पाछो

:: ठिकाणो ::
'संस्कृति'
विकास कॉलोनी-3
कोटा (राज.) 324002
मो. 9351350787

ISSN : 2320-0995

बैन रुक्मी की देह कै पास जा बैठ्यो छो। पेमली को बाप रमेश जस्यो बी छो, पण छो तो बाप ई। बारां पाड़-पाड़'र रोबा कै सिवा कांई कर सकै छो।

''म्हनै माफ कर दीजो रुकमी, थारै तांई म्हनै घणो दुख दियो, तूं म्हारै तांई कस्या संकट में छोडगी। ईं नन्हा जीव नै म्हूं कस्यां पाळूंगो।'' पेमली को बाप रुकमी का निर्जीव सरीर सूं चपक'र रोरयो छो।

गांव का संदा मिनख भेळा होयग्या छा, पण कोई कै तांई सूझ न री छी कै कांई करां या कसी बिपता आण पड़ी रामजी। ''अब जै होणी छी, वा होगी, रामजी की मरजी याई छी, पण अब कांई करणो छै।'' गांव का बडा-बूढा अेक साथ बोल्या।

रमेश रोतो-रोतो घायल जस्यो होग्यो छो; ऊंकै तांई कांई सुधबुध कोनै छी, उ तो या दिनां पैल्यां सूं ई बेमार चालरयो छो। दारू पीबा सूं सरीर घणो कमजोर होयग्यो छो। रुकमी थारै म्हारै घरां में काम कर'र रोटी पाणी को इंतजाम जस्यां-तस्यां करै छी। पैली रमेश महीना में थोड़ा दिन मजूरी कर दारू पीबा कै बाद बच्या पीसा रुकमी लड़-लड़ाकर ले लेवै छी। अस्यां घर की गाडी चाल री छी।

मामो जै घणी देर सूं गुमसुम होय'र बैठ्यो छो, ऊ बोल्यो, ''रामजी सूं कुण जीत सकै छै, म्हांकी रुकमी तो म्हांनै छोडकै भगवान कै चरणां में जा पूगी, पण ऊंकी निसाणी छोडगी। आज सूं या म्हांकी होई, म्हारा शंकरिया कै लारै-लारै या बी पळ जावैगी, मरबा काजै ईं नन्ही जान नै अठी तो थोड़ी छोड'र जावांगा।''

गांव हाळा का सैयोग सूं संदो कामकाज नमटग्यो। बेमार रमेश अर नन्ही जान नै भारी मन सूं लेय'र मामा-मामी आपणै घरां आयग्या। मामो पेमली पै जान दयै छो, पण मामी बोलबा में थोड़ी करड़ी छी। पण जस्यी बी छी, अपणा आंचळ को सायरो तो उनै ई द्यो। ऊंठी नै रमेश नै जाणै खाटलो ई पकड़ल्यो छो, पण पेमली नै देख'र जाणै ऊंमें जान आ जावै छी। पेमली नांव उनै ई पाड़्यो छो। ऊंकी खाट पै जद पैली बार पेमली कै तांई सुआण्यो, रमेश रुकमी कै भाई-भोजाई सूं हाथ जोड़'र बोल्यो, ''थांकै तांई बी म्हनै घणी गाळ्यां काढी, भली-बुरी बातां खी, म्हारै तांई माफ कर द्यो, रुकमी की निसाणी को ध्यान राखजो, म्हारो कांई भरोसो, आज मरया काल दूसरो दिन... हां, आज सूं ई नन्ही जान को नांव प्रेमलता छै। म्हारी प्रेमलता म्हारी लाडली, भगवान ईंनै अर थांनै सुखी राखै।''

समै बीतता कांई बार लागै छै। प्रेमलता छह महीना की हो चाली छी, पण ऊंको नांव प्रेमलता सूं पेमली होयग्यो छो। प्रेमलता कोई न बोलतो। पेमली-पेमली संदा घर हाळा अर गांव हाळा बुलाता। मामी अपणा बेटा शंकर कै लारै-लारै पेमली नै बी अपणो दूध पाय द्यै छी।

पेमली में जाणै जान आयगी छी। मां कै रूप में ऊंनै तो मामी ई मली। ऊ अण समझ काजै कांई मां अर कांई मामी, वा ई पेमली की सब-कुछ छी। बिधाता की मरजी कै बना पत्तो बी न हाल सकै। मामा न रमेश को घणो इलाज करायो, पण कांई इलाज न लाग्यो। ऊंकी हालत घणी बिगड़ती जा री छी। रुकमी कै जाबा कै बाद जाणै उनै जीबा की आस छोड दी छी... हिम्मत हार बैठ्यो छो अर एक दिन ऊ बी पेमली नै छोड'र रुकमी सूं जा मिल्यो। बिना मां-बाप की होगी छी पेमली, पण मामो घणी जान पेमली पै देवै छो। पेमली मामी की डांट अर मामा का दुलार सूं नानेरा में पळ री छी। मामी कदी-कदी कैय देंती, ''संदा म्हारै माथै ई छै। या कमी रैगी छी या बी पूरी होगी, छोरी की जिम्मेदारी घणो दोरो काम छै ।''

मामी भल्यां सूं कड़ी बात कैय द्यै छी, पण पेमली में उंको बी मन रमबा लग्यो। दूध पुआबा सूं अेक रस्तो जाणै जीव सूं जीव को जुड़ग्यो छो। कहतां-सुणतां पेमली बड़ी होगी। मामा, शंकर अर पेमली को नांव अेक स्कूल में मंडा दियो। पेमली पढबा में घणी होसियार निकळी अर शंकर को पढबा में चित्त कम ई लागै छो। गांव में कबड्यां देतो फरतो। संदा गांव हाळा कैता, ''शंकरिया नै तो मां-बाप को नांव रोसन कर मेल्यो छै। ओटंग करबा में सबसूं आगै छै। पढबा में ढपोरशंख छै।'' अर बिना मां-बाप की पेमली कै तांई कहता—''देखो, अपणै रस्तै जाणो अर अपणै रस्तै आणो। अपणा नाना-मामा को नांव रोसन करेगी पेमली।'' गांव हाळा शंकर की शिकायतां लेय'र आता। डांट-फटकार पड़ती, पण ऊंकै कान पै जूं बी न रेंगै छी। अठी पेमली बढ़िया नंबर सूं बाहरवीं कक्षा पास होयी छी। शंकर फेर फेल होयग्यो छो। मामी कळपती होयी बोली, ''कांई करां जणा कस्या भाग लिखा'र लाया छा। अेक छोरो, ऊं बी काई गत को कोनै। बुढापा में म्हांको कांई होवैगो? न तो ईं छोरा को काम में चेतो, न पढबा में, फेर फेल होयग्यो, ईंनै कस्यां समझावां?''

''मां, थे कांई चिंता मत करो, म्हूं छूं न, शंकरियो समै पै समझ जावैगो।'' पेमली घणी समझदारी सूं कैती।

या सुण'र मामो घणो खुश हो जातो। पेमली मामी नै शंकर कै लारै मां ई बुलावै छी। पण मामी तो मामी छी, कदी-कदी रोस माथै कह देवै छी, ''या छोरीजात कांई न्याल करैगी। पराया घरां चली जावैगी।''

मामो समझातो, ''शंकरिया की मां, तूं कस्यी बातां लेय'र बैठ जावै छै। आजकाल जमानो बदळग्यो। छोर्‍यां छोरा सूं कम कोनै।'' अस्यी बातां सुण पेमली घणी उदास हो जाती। अब वा समझबा लागगी छी। म्हारा मां-बाप छोड'र चला गया। म्हनै तो कांई याद बी कोनै, पण कांई उपाय छै। मनड़ा नै समझाती उफणता बिचारा नै विराम देती, फेर हंसती थकी अपणा काम पै लाग जावै छी।

शंकरियो संदा गांव में भूऱ्या खातो फिरतो लोगां का ओटंग करतो। पेमली को पढबा में घणो ध्यान छो। मामा नै मामी कै तांई समझा दी छी। गांव कै पांच कोस सरकारी नयो कॉलेज खुलग्यो छो। पेमली कै तांई मामो पढबा मेल दी छी। मामी को प्रेम अर झुकाव पेमली की आडी होबा लागग्यो छो। सबसूं कैती, ''म्हारी पेमली संदा परिवार को नांव रोसन कर देगी, आजकाल कांई बेटा अर बेटी, सब बरोबर छै। ईंका पढबा सूं म्हांको मिनख-जमारो बी सुधरग्यो, न तो कांई करता। छोरो तो सुणै कोनै। पढबा सूं ई पार लागैगी। आज छोऱ्यां कांई छोरा सूं कम छै। घरहाळान की सबसूं पैली बेटी नै ई दुखै छै। भगवान म्हारी पेमली नै सुखी राखै।''

अब मामी की सोच में घणो बदळाव आयग्यो छो। पेमली रोजीना बस सूं कॉलेज जाबा लागगी छी। मामी कै लारां घर में हाथ बंटाती, मामा की सेवा करती अर उठी शंकरियो बंड बण'र घूमतो, कदी नदी किनारै बैठ'र पाणी में भाटा फेंकतो, रूंख की डांडी तोड़'र ढांढा-ढोर नै घेर'र भगातो। वै मूक जानवर डरप कै भागता तो ताळ्यां पीटतो घणो खुस होतो। पढबा में ऊंको चेतो कोनै छो। थोड़ा दिन पाछै पढाई बी शंकर नै छोड दी छी। हां, पण पेमली सूं घणो प्रेम छो। ऊंको घणो ध्यान राखै छो। जद वा कॉलेज जाती, तो ऊंसूं शंकर कैतो, ''पेमली थारै तांई कोई कांई कैवे तो म्हनै बताजै, म्हूं ऊंको सारो दिमाग ठकाणै लगा द्यूंगो।''

पेमली हांस'र कैती, ''भाया, तूं चिंता मत कर। म्हूं बी थारी बैन छूं। म्हूं कांई कोई सूं कम छूं। थारै ताणी तो बात पुगैगी बी कोनी।'' शंकर सुण'र बोल्यो, ''ठीक छै, पण म्हूं थासूं बडो छूं अर भाई छूं। म्हारो बी तो फरज बणै छै न!''

जीवण का न्याळा-न्याळा रंग, भगवान सूं कुण जीत सकै छै। ऊंकी लीला अपरंपार छै। समै रेत ज्यूं हाथां सूं जाणै फिसळतो जावै छो। बिना मां-बाप की पेमली का धिनभाग, जै मामा-मामी का आसीस सूं पढरी छी। दिन भाग्या जाऱ्या छा। पेमली बी.ए. पैला नंबर सूं पास होयी छी। मामा-मामी घणा राजी छा। मामो गांव हाळा सूं कैतो फरऱ्यो छो, ''घर की लिछमी छै म्हांकी पेमली। ईंकै आबा सूं म्हांकै घर में जाणै रौनक आयगी। सब अपणो-अपणो भाग लेय'र आवै छै।''

अठी कॉलेज में बी.ए. तांई पढाई छी। अब बी.ए. सूं आगै शहर में जाणो पड़तो। ''अब कांई करां? घणी पढली। पेमली कै लेखै बढिया छोरो ढूंढबो सरू कर द्यो, स्याणी होगी। अब या जिम्मेवारी बी आपण पूरी कर द्यां, आगै ईंको भाग छै।'' मामी पेमली का मामा सूं बोली।

पेमली या सुण'र छानमून होय'र बैठगी। घणी समझदार छी पेमली। संदी बातां नै समझै छी। मामा-मामी नै कांई कसर न छोडी छी। पढाई-लिखाई अर अतनी बडी कर दी। वा हिम्मत सूं बोली, ''मामाजी! ...मां! म्हूं बी.एड. करबो चाहूं छूं। मास्टरणी बण'र थांको स्हारो बणूंगी, थांको नांव रोसन करूंगी, थांकी सेवा करूंगी, थांनै म्हारै तांई

पेट काट'र पढायो छै, अब म्हारी या हूंस बी पूरी करद्यो, म्हनै म्हारी भायल्या कै लार बी.अेड. को फार्म थांसूं बिना पूछ्यां भर दियो छो। म्हारो ट्रेनिंग लेखै नंबर बी आयग्यो। थां कस्यां बी म्हारी फीस को इंतजाम करद्यो। सारो करजो अेक झटका कें उतर जावैगो।''

दिन बीतरया छा। पेमली नै वाई करी जै ऊंकै मन में छी। मामा-मामी नै घणी सोची। ''कांई जाणै पेमली कांई करैगी, पण आपण नै अतनो करयो तो ईंकी या मंसा बी पूरी कर द्यां।'' मामो बोल्यो छो। सुण'र करजो कढा'र पेमली को अेडमिसन करायो। पढाई पूरी होतां ई स्कूल की नौकरी का फार्म आयग्या। ट्रेनिंग में पेमली की पोजीशन आई छी पैलै नंबर। पैलै नंबर भी संदा जिला भर में छी। संदा गांव में पेमली अर ऊंका मामा-मामी की चरचा छी, ''घणो पुन्य को काम कर दियो पेमली का मामा-मामी। बैण की निसाणी को जमारो सुधार दियो, खुद को बी जनम सफळ कर लियो। कांई बेटा अर कांई बेटी।'' गांव हाळा कैबा लाग्या छा।

अेक दिन सूरज की किरणां पै सवार होय'र खुशियां पेमली का नानेरा में आय'र ढेरो डाल दियो। सदा संकट का बादळा जाणै छंटग्या। खुशी की लहर जाणै च्यारूंमेर फैलगी। पेमली का मूंडा सूं बोल कोनै फूटरया छा। आंख्यां डब-डबायगी। पेमली की सरकारी नौकरी आयगी छी। ऊंकै तांई अेक पखवाड़ै कै भीतर नौकरी ज्वाइन करणी छी। घर में चौमेर खुशी छायगी छी। शंकरियो घणो खुश होय'र संदा गांव में ढिंढोरो पीटरयो छो, ''म्हारी बैन पेमली मास्टरणी बणगी... म्हारी पेमली घणी हुंसियार छै। काकाजी सुणो! पेमली मास्टरणी बणगी।

घर की आडी भागता होया ऊंकी सांस फूलगी छी, ''मां-बाऊजी! देखो आपणी पेमली की नौकरी आयगी, यो देखो रिजल्ट। आजकाल रिजल्ट मोबाइल में बी आ ज्यावै छै।'' या सुण'र मामा-मामी कांई न बोल पाया। पेमली मामा अर मामी खनै आयगी छी। मामी पेमली नै छाती सूं चपका'र बोली, ''थनै तो म्हा संदा को मिनख-जमारो सुधार दियो। घर का संदा रोजणा मेट दिया अे म्हारी लाडो... म्हारी चिड़कली पेमली। म्हांकी रुकमी जाणै ईं लेखै ई थनै मामा-मामी की झोळी में डाल'र गी छी। भगवान थनै खुश राखै, लंबी ऊमर देवै अर थारा मां-बाप की आत्मा नै सांति देवै। थनै म्हारो दूध को मान बढा दियो म्हारी पेमली!'' या कहती थकी मामी नै पेमली की बाथ जोर सूं भरली छी। पेमली नै हाथ बढा'र भाई शंकरिया कै अर मामा का गळै में दोन्यूं हाथ डाल, हचक्या भर-भर रोबा लागगी छी।

''अरी पेमली! छानी होज्या बेटी, थनै तो मामा-मामी नै तार दिया, मामी कै दूध को करज उतार दियो।'' घर में भीतर आती पड़ोस की जानकी काकी बोल री छी।

◆◆

जीनस कंवर

आखरी जातरा

नरेश सा जोधपुर मांय रैवता। रंग सांवळो। आछी कद काठी। नौकरी भी सरकारी अर भगवान री दया सूं कीं कमी कोनी ही जीवण मांय। रामजी राजी। नरेश सा मन सूं ई राजा आदमी है अर फेर नाम भी नरेश तो पछै क्यूं नी व्है। हजार सद्गुण नरेश सा मांय हा, पण अेक औगुण सगळा गुणां पर भारी पड़ै अर बो हो दारू पीबा री आदत।

जोधपुर में नरेश सा रो बंगलो सरदारपुरा मांय हो। पुराणो बंगलो देख'र सगळा देखता ई रैय जावता। शानदार इमारत सब रो ध्यान खींचती। जोधपुर रा जिला कलेक्ट्रेट मांय नरेश सा अेकाउंटेंट री पोस्ट पर काम करता हा। नरेश सा आपरै बंगलै सूं टाइम पर रवाना होवता अर आफिस पूगता। आखी कलेक्ट्री में सगळा नरेश सा री ईमानदारी री तारीफ करता हा।

नरेश सा रा पिताजी आछी पोस्ट पर रिया, इण वजै सूं धन-दौलत री कीं कमी कोनी ही। घणै रुआब वाळा लोगां में दिन-रात उठबो बैठबो हो। आयै दिन घर में पार्टी व्हैती रैवती। इस्यो ई कोई दिन हो। दोस्त-भायला लोग बस अेक बार थोड़ीक दारू पाय दी। मन कोनी हो, पण बीं बगत प्रेम मांय चोट खायोड़ा नरेश सा नै कीं नीं सूझियो। कॉलेज मांय सागै पढती सीमांतिनी सूं घणो प्रेम हो नरेश सा नै। आखिर चार साल कम कोनी हुवै कोई भी रिश्ता नै पळबा में। बीं बगत कित्तरा ई सुपना देख लिया हा, पण औ जात-समाज गेल फिरगो। घणी कोसीस करी समझाबा री, पण कोई पख समझबा नै त्यार कोनी। मामलो बिगड़तो देख'र लड़की भी घरवाळां रै दबाव रा फेर में आयगी अर दूजी

:: ठिकाणो ::
943, रामनगर कॉलोनी
ग्लैक्सी अस्पताळ रै साम्हीं
शास्त्री नगर
जयपुर (राज.) 302016
मो. 9462657601

 ISSN : 2320-0995

जगह ब्यांव कर लियो। बस, आ ईज बात नरेश सा रै हियै में कांटा री भांत चुभगी। बांरो कहबो सही है कै साथ जीता-साथ मरता, पण वा मना क्यूं करी। सीमांतिनी मन सूं नरेश सा नै चावती ही, पण विरोध करबा सूं डरती। वा आ बात भी आछी तरां सूं जाणती ही कै उण रा विरोध कांई काम नीं करैगा। बीं री आवाज सगळा मिल'र दबा देसी। सीमांतिनी नरेश सा नै जीवण साथी रै रूप में निराई सुपना दिखाया। वींनै पक्को विस्वास हो कै नरेश सा रै लारै उणरो जीवण राजी-खुशी बीतैला। परिवार, समाज रो सामनो करण री हिम्मत वीं में नीं ही। इणरो कारण औ हो कै परिवार अर समाज में वा अेकली पड़गी। जो कोई अेक जणो भी वीं रो साथ देवा खातर त्यार व्हैतो तो वा जरूर विरोध करती। लाचार होय'र वींनै घरवाळां री बात मानणी पड़ी। निरी कोसिस करी भुलाबा खातर, पण याद तो भूत ज्यूं पीछो नीं छोड रयी ही अर अस्यी ही कोई घड़ी मांय दोस्त लोग दारू री मनवार कर दी तो दिल टूट्योड़ा नरेश सा भी घुटणा टेक दिया अर अेक ई घूंट में पूरी री पूरी गिलास खाली कर दी। बस, अेक बार संकोच टूटियो, तो फेर कद जरूरत अर शौक में अंतर खतम होयग्यो, पतो ई नीं पड़्यो। पैलीपैल तो सरम लागी तो आपणी मां सूं माफी भी मांगी। पछै तो झिझक खुलगी। धींरै-धींरै समाज मांय आ बात फैलणी सरू होयगी कै नरेश सा सीमांतिनी नै भूलबा खातर नशेड़ी होयग्या है। घरवाळा नै चिंता होयगी कै बिरादरी में थू-थू होवैली। आपरी इज्जत में दाग लागतो देख'र आनन-फानन में छोरी ढूंढबा लागा। घणी भागदौड़ रै पछै गरीब मां री हुनरमंद रतन बाई रै सागै जबरन नरेश सा रा फेरा पड़वा दिया। ब्यांव रो पूरो खरचो भी नरेश सा री मां सा ई दियो। नरेश सा भी ब्यांव रै पछै घणी कोसिस करी कै आपरी बींदणी नै मन सूं अपणा सकै, पण आती-जाती याद में बै न तो सीमांतिनी नै भुला सक्या अर ना ई आपरी लुगाई नै पूरी तरह सूं सीमांतिनी री जग्यां देय सक्या। अब नरेश सा में दारू रै साथै झल्लाहट भी बधती जा रैयी ही। परेशानी में मां अर लुगाई सूं झूठ बोलबो कद सरू कर्‌यो, खुद नरेश सा नै भी याद कोनी। दारू चीज ई अैड़ी है कै मिनख सूं झूट-कपट रा काम करा देवै।

साची बात कैयग्या आपणा बडा-बडगर कै मिनख री संगती चोखी होवै तो आदमी रो सुभाव सोना सरीखो, नीं तो बिगाड़ता टैम कोनी लागै।

अठीनै केई दिनां सूं नरेश सा री तबियत खराब चाल री ही। बै थोड़ा-सा ठीक होवता अर फेर दारू पी लेवता। डाक्टर साब दो दफां पैली भी कैयग्या कै दारू अबै थांरै सरीर रै वास्तै जहर है, सो इणनै छोड-छिटकावो। कम सूं कम थांरै छोटा टाबरां खातर ई मत पीवो, अै टाबर रुळ जासी। जका पईसा थे दारू में उडावो हो, अबार थांनै ठा कोनी पड़ै। बगत आयां सूं पतो पड़सी, जद थे कोई सूं पईसा मांगसो। उण बगत सब थांरै सूं मूंडो मोड़ लेवैला। थे समझदार हो, कानूनी री पढाई भी कर राखी हो, अबै तो समझो,

दारू पीबा वाळा रो माल भी जावै तो सागै माजनो भी जावै। देखो, संभळ जावो, लिवर खराब होबो सरू होयग्यो है आपरो। चेता रियो हूं म्हैं थांनै!''

''अरे डाक्टर साब! थे भी कांई बार-बार समझावो हो म्हनै, म्हैं कोई टाबर हूं कांई? फेर म्हैं कांई थांरै पईसां री पीऊं हूं, जो थे म्हनै समझाबा आ जाओ।'' नरेश सा नशा मांय गरब सूं कैयो।

''अरे बेटा, म्हैं थारै पिताजी रो भायलो हूं। इण सारू थारी पीड़ा आवै म्हनै, नींतर म्हनै कांई मतलब और सूं।''

अबै अै बातां रोज-रोज टेपरिकार्डर जियां चालती-सी मालूम पड़ै डॉक्टर साब अर नरेश सा दोन्यूं नै, क्यूंकै दोन्यूं ई अेक ई बंतळ रोजीना दुसरावता रैवता... बै ई सबद अर बै ई हालात। बै ई घोड़ा अर बै ई मैदान।

घर में नरेश सा री मां, जकी कै पिचत्तर बरस री है, रात-दिन दुखी होवती रैवै बापड़ी। म्हैं कांई इस्यो ई बगत देखण सारू औलाद जणी ही। म्हैं जणी तो जणी, पर जलम ई बांझड़ी हुई। दुखी मन सूं अस्या ई उद्‌गार फूटै। नरेश सा री घरआळी भी घणो समझावती, सुधर जाओ थे। बा टाबरां रो वास्तो ई देंवती, पण दारू पीबा वाळा कद सुधरै, जो नरेश सा सुधरता।

टैम निकळतो गयो अर तीन बरस होयग्या दवाई-दारू चालतां, पण अबकी बार नरेश सा री तबियत घणी खराब हुई तो सगळा रिस्तेदारां नै भेळा कर लिया। डाक्टर साब भी कैय दियो कै अबकै कोनी बचैला।

बेगी-बेगी सांसां आवती-जावती देख'र घर रा अनुभवी जाणग्या कै कदै भी आखरी सांस हो सकै है, तो नरेश सा रै कान मांय दान-पुन बोलबा लाग्या। कोई पांच किलो बाजरो, तो कोई दस किलो ज्वार चिड़ी-चुग्गा खातर बोल्या। कोई कैयो कै भागवत गीता रो आठवों अध्याय सुणावो, जिणसूं कम तकलीफ रै मसाणै पधारै। अठीनै आठवों पाठ आधो ई बांच्यो होसी, कै सांसां री डोर टूटगी अर नरेश सा देवलोक सारू घोड़ा हांक दिया।

पूरै परिवार पर मुसीबतां रो पहाड़ टूट पड़्यो। परिवार रै नांव पर हो ई कुण। नरेश सा री पिचत्तर साल री मां, वांरी लुगाई अर दो छोटा टाबरिया!

समाज मांय समचार पूग्या। समचार जाण'र निराई जणा नरेश सा रै घर रै बारै भेळा हुया। मोतबिर लोग आखरी जातरा री त्यारी में लागा। नरेश सा नै सिनान-संपाड़ो करायो, गाभा बदळ्या अर अरथी पर सुवाण्या। लोगबाग फूलमाळा पैराई। अरथी उठातां ई अेक लारै आवाज उठी—राम नाम सत है, सत बोल्यां गत है। चार जणा अरथी नै लेय'र बारै आया अर पछै कांधा बदळता मोक्षरथ रै कनै पूग्या। अरथी मोक्षरथ मांय राखीजी। घरवाळा

अर रिश्तेदार लोग मोक्षरथ मांय बैठ्या। बाकी रा सगळा दागी खुद रा स्कूटर अर मोटरसाइकिल पर बैठ'र मसाण री आड़ी रवाना हुया। नरेश सा आखरी जातरा पर जाय रैया हा।

अबै अरथी नै ले जायां पछै पिचत्तर साल री मां रै साम्हीं बो ईज दरसाव जींवतो होयग्यो, जद नरेश सा रा पिताजी सुरग सिधारया हा। जद माथै सूं सिंदूर पूंछीज्यो हो, राल री टीकी हाथ सूं हटा दी गई, बिना गोटा-किनारी री ऊंधी लूगड़ी ओढाईजी ही। हाथां रो मूठियो झाड़ दियो गयो। अरथी रै उलटा फेरा दिराया हा। कितरा पीड़ा रा कामां सूं भरियो हो औ टैम अेक लुगाई रै तांई। अेक तो धणी गयो, बियां ई कितरो बडो दुख अर ऊपर सूं अै रीत-रिवाज, जका फगत लुगाइयां रै वास्तै ईज बण्या है।

विधवा लुगाई री पीड़ा रो कठै अंत? बींद रै गयां पछै दूजै दिन परभातै बेगा उठ'र मूंडो ढांपती अर रिवाज रै खातर साथ मांय जतरा भी लोग सोग में बैठबा खातर आवै हा, वांरै नाश्ता-पाणी रो बंदोबस्त अलग सूं। समाज कैया करै कै मरबा वाळा री लुगाई नै चितार चितारबो जरूरी होवै अर औ क्रम बारवां तक चालतो रैवणो चाईजै। खैर, लुगाई रो मन तो रोवै ई है, पण आं कर्मकांडां मांय बेचारी रो तन-मन घणो घायल व्है जावै। मां ईं हालत सूं गुजरी तो अपणी बहू री पीड़ा नै समझ पा रैयी ही। मां रै मन मांय अेक पीड़ा आ भी ही कै बहू रो जीवण खराब करबा मांय खुद नै भी जिम्मेवार मानती, क्यूंकै आपरी झूठी शान खातर बेटा रो ब्यांव गरीब रतन बाईसा सूं कर दियो। ब्यांव में अेक मोटी रकम अंदर-अंदर रतन बाईसा रा पिता नै दीवी ही। आगै भी बगत-बगत पर पईसां सूं मदद रो वायदो करियो हो। गरीब आदमी भी मानै है कै पईसा भगवान कोनी, पण साच्याणी तो भगवान सूं कम भी कोनी। मन मांय पिछतावै रो दुख घणो गैरो हुया करै है। साथै आ बात भी साची कै अेकसी पीड़ा भी लुगायां नै मन सूं अेक कर दिया करै। फेर आ तो लोक री बिरथा बात है कै लुगाई ई लुगाई री दुसमण हुवै है। जे संसार मांय लुगायां अेक मत हो जावै तो सत्ता पलट देवै है। बेटो तो आपणी दारू री आदत गेल गयो, पण बापड़ी बहू रो कांई दोस है?

मां री बेगी ई चित्ततंद्रा टूटी अर बिचारी रोवती जा रैयी ही, पण विचारां री रेल दिमाग मांय छुक-छुक चालण लागरी। आपरी जिंदगी रो चित्रहार आख्यां रै सामने बेगो-बेगो चाल रैयो हो। मां बापड़ी रो पैली खुद रो धणी चलग्यो। फेर वा आपरी सारी सगती टाबरां नै पाळबा मांय खरच कर दी। सोची—बुढापा में सुख रा दिन देखैली। रात न रात नीं जाणी अर दिन नै दिन नीं जाणी। सब फरक भूलगी। बस, मन मांय अेक ई अलख जगाई कै म्हारा टाबर कीं बण जावै, तो म्हारै घर भी सुख रो सूरज ऊग जावै। मेहनत करबा में तो नरेश सा भी कोई कसर नीं छोडी, पण आपरै हालतां मांय मजबूती कोनी राख

सक्या। फेर आपरी आदतां री गुलामी करी। आगै परिणाम सामनै हो फेर, होणी रै आगै कीं री चालै है।

उणीज बगत कांई देखै कै नरेश सा री लुगाई नै ऊंधी लूगड़ी ओढाबा री अर चूड़ी बधारणै री त्यारी व्है री है। नीं जाणै पिचत्तर साल री नरेश सा री बूढी मां नै कांई सूझी जो बहू रै आडी फिरगी। कड़क आवाज में बोली, ''बंद करो अै दकियानूसी रीत-रिवाज,जका लुगायां री पीड़ रा कारण बणै। म्हारो जिगर रो टुकड़ो म्हारो बेटो तो सुरग सिधारग्यो। बो खुद री लुगाई नै इत्तरा दुख में देख'र बियां ई पीड़ा में होसी। थांरै सगळां रै आगै हाथ जोड़ूं कै म्हारै मरयोड़ा बेटा री आतमा नै औरूं मत कळपावो।''

समाज री लुगायां कनै बैठी सब देख रैयी ही। बूढी लुगायां जरूर नाराज व्ही, पण आज री नूंवै विचारां वाळी लुगायां राजी हुयी। सगळी लुगायां सासू अर बहू नै धीजो बंधा रैयी ही। इतरै में मां बोली, ''पुराणै टैम में लुगायां धणी रै लारै सती होवती, पण भगवान भलो करै ब्रह्मसमाज रा राजा राममोहनजी राय रो। वै समाज सूं इण खराब रिवाज नै खतम करवायो। आज आपां महिला सशक्तीकरण री बातां करां, पण कोरी बातां ईज करां। आज रै जुग में जे महिला री इज्जत नीं करैला, तो परिवार रो काम कोनी चालसी। म्हारी बहू पढी-लिखी है। जमानै रै सागै चाल'र समाज में आगै बधसी अर टाबरां रो भविस बणसी।'' औ कैय'र बहू रो हाथ पकड़'र बींनै खुद रै कनै बैठा ली अर रोवती बहू रा आंसू पूंछ'र माथै हाथ धर बोली, ''देख बहू, काळजो तो म्हारो भी फाट रैयो है, पण तूं चिंता मत कर। आपां दोन्यूं मिल'र हालात रो सामनो करस्यां। समै रै सागै सब ठीक होसी बावळी! तूं रोवै मतना। म्हैं थारै सागै हूं। बहू ई सासूजी रै गळै मिल'र बोली, ''मां, अबै सासू-बहू दोन्यूं मिल'र आपरै काळजै री कोर नै हमेस सारू विदाई दी।

◆◆

किरण राजपुरोहित

 ISSN : 2320-0995

पायल गुप्ता 'पहल'

विधवा सुहागण

''नजर नीं लागै म्हारी छोरी नै...।'' कमला नी मां अेने देकतं में बोली पड़ी। शादी न दाड़े कमला अेने मस्त सुंदर देकैई रै हति, एनी मां अने हत्ता रिश्तेदार खुश हता, पण कमला नै वदारै कोई खुशी न हत्ती। अेने तो भणवूं हतु, पण मां-बाप नीं खुशी अगाड़ी काईं ए बोली नईं सकी। मां-बाप नु एम मानवु हतु कै वदारै भणैली, तो छोरी नै गाम में कोई छोरो नीं मिलैगा। अेटले कमला नै स्कूल मोकळवु बंद करावी दीधू। कमला ना बाप खेतर में काम करते-करते ही धुलजी ना बाप थी वात नक्की करी अनै जल्दी-जल्दी कमला नै धुलजी थी परणावी दीधी।

जराक श्याम पण सुंदर नैण-नक्श वारी कमला जीवन ना सुंदर सपना जोती अेना पैलै ई खेतर में जोतवाई गई। शादी ना बीजे दाड़े थी अेनी हाउ गांगड़वा करवा मंडी हत्ती। नवी पन्नेली कमला खुद नु अे हामरती अनै मां-बाप नी बुराई पण हामरती। हाउ नी गारे तइ खावा करता वदारै खावा लागी। हत्ता घर नू काम करती नै खेतर नु अे काम करती, आ जोई ने धुलजी पण आळसी थवा लाग्यो। नवरो रेवा थी दारू भी अति पीवा लाग्यो। दारू पीय नै कमला नै कूट्या वना अेक अे दाड़ो नीं नेकरतो।

खैर, समय नी गति प्रबळ है। कमला नै अेक दाड़ो खबर पड़ी की अे हवे नवा जीवण नै जनम आलवा लायक थई है। कमला मां बणवा नी त्यारी में हती। आ खबर थी कमला खुश त हूं थाति, वदारे हिजरई गई। आवा घर परिवार ना माहौल में नवा जीव नै लाववा ना विचार थी कमला तो रोज मरवा लागी, पण धुलजी तो छोरा ना इंतजार में दारू पीवा नी अति करवा लाग्यो।

:: ठिकाणो ::
फ्लैट नं. 502
वर्धमान एनक्लेव, मदार
अजमेर (राज.) 305024
मो. 9414219355

ISSN : 2320-0995

कमला नी हाउ तो अेलान करि ने बेहि गई, ''जो छोरी जणी तो मां-बेटी नो जीवू मुश्किल कर नाखूंगा।''

बेटी नु जनम नी थाय, अेवी प्रार्थना करते-करते, दारू ना नशा में धुत्त धुलजी नी मार खाते-खाते अने सासू नी गारे हामरते नौ महीना नेरी गया। जनम नो दाड़ो आव्यो नै कमला ना गर्भ थी अेक सुंदर बालक नो जनम थयो। खुशी ना माहौल में सासूजी आक्खा फरा में मिठाई वांटी अनै धुलजी अेक पूरी बोतल पीय गयो। कमला ना मन में आज भी घबराहट हति कै बेटी जन्मी होत तो सुं थातु। प्रकास नाम रखणु बेटा नु। घर में, खेतर में काम करते अनै धुलजी नी दारू नी खाली बोतल अवेरते दस साल नेरी ग्या। अति दारू पीवा थी धुलजी नी हालत वगड़ती गई। दस-बार दाड़ा थी अस्पताळ में भरती धुलजी आज आखरी सांस लीधी। लाख कोशिश बाद भी कोई दवा काम नी आवी।

धुलजी तो शांत थयो, पण अेनी मां नो रूप शैतानी थईग्यो। धुलजी नी मौत नो हत्तो वाक कमला माथै नाखी नै अेने वतुली खावा मंडी हती। चिता नी आग ओलवाती अेना पैलै तो कमला अने प्रकास नै घर थी बाहर नो रस्तो जोवाड़ दीधा—''थारै कनै थारो छोरो है, पण म्हारा छोरा नै खाईगी तूं।'' कमला नी सासू एवु गांगड़ी।

कमला अनै प्रकास लाख हाथाजोड़ी करी, पण सासू कण भर अे नी नरमाई। मां अनै बेटो हत्ता गाम में रोता फर्‌या, पण रंडाई कमला नै आसरो तो दूर नी वात, कोईअे पाणी पीवाड़वा त्यार नी थ्यु। अेकली कमला बेटा नै लई अंधारी रातर में क्यां जती, रोई-तपड़ी नै पाछी सासू ना पग में पड़ी। वऊ माते तो नीं, पण शायद नाना प्रकास नु मोडु जोई सासू नै जराक दया आवी। जेम-तेम बोली, ''आंगड़ा में पड़य रो तमे बे जण।''

मजबूरी ना खातर पोता ना घर ना आंगड़ा में रेतै-रेतै अनै सासू नी गारे खातै छह-सात वरस नेरि ग्या। नानो प्रकास हवै मजबूत कद-काठी वारो किशोर थईग्यो। सही खराब में अंतर करवा नी समझ भी उमर हाते वधी गई। बा अेनी मां नै रोज तवा करती जोई नै प्रकास हवै शांत रैवा लायक नहीं हतो।

''माँ, हवै औ घर नै औ गाम छोड देवा नो समै है, तूं तैयारी कर।'' प्रकास कमला नो हाथ पकड़ी नै बोल्यो। कमला तुरंत बोली, ''आ दुनिया वधारै खराब है बेटा, वना ठौर क्यां लई जाएगा?''

''तूं चाल मां, मेहनत-मजूरी करूंगा, दाड़ै अेक फरा रोटी खावा मलै तो वांदो नईं, पण आ गारे हवै नत खवाती।'' बेटा नी जिद अगाड़ी कमला मजबूर थई नै पेढी उतरी पड़ी।

अजाण गाम में जई बे जण घर-घर हाथ जोड़्या, पण कोई काम हाथ नईं आव्यु। जेम-तेम मंदिर में रातर काढी नै वेला फेर काम मांगवा नेरी पड़्या। सांझ पड़तै-पड़तै

विधवा अनै रूपारी कमला समझी गई कै काम तो मली जाए, पण हाटे अेनै...! आवा विचार थी कमला कंपकंपाई गई। डरतै-डरतै जेम-तेम आज नी रातर भी मंदिर में काढी।

''प्रकास, औ गाम छोड़वु पड़ैगा बेटा, तूं चाल!'' सूरज उगतं में कमला अे क्यू। वधारै सवाल-जवाब कीधा वना बे जण बस में बेहि रवाना थ्या। खूब दूर सफर करीनै अेक अजाण गाम ना मोड़ माथै बे जण उतरी पड़्या। गाम में जता पेलै वना अेक सबद बोलै कमला टीकी, चूड़ी, मंगळसूत्र अनै सिंदूर थी खुद नै सजावी बोली, ''चाल प्रकास, ईं गाम में कदाक बढिया काम मली जाए।'' प्रकास सन्न थई ग्यो, ''मां, आ...?'' प्रकास नी वात पूरी थता पैलै कमला बोली, ''मां नके कै मनै, आज थी आना गाम वास्तै अमै पति-पत्नी, कारण कै औ समाज विधवा बइरी नै वतुलि खावा त्यार है। मनै देखती हरेक निजर में खोट है, पाप है, लालस है।'' प्रकास माथु पकड़ी ने बेहि ग्यो। मां नै जवाब आलता पैलै गया गाम ना सरपंच नी, दुकानदार नी अनै अेना नौकर नी मां नै जोती नजरें याद आवी गई। जराक विसारी ने प्रकास बोल्यो, ''तूं सुहागण थई जा मां, वांदो नथी पण धणी केम मां, मनै बेटो रैवा दे, मनै भई कई दे मां।''

तुरंत कमला बोली, ''ना प्रकास, सुहागण साथै अेना धणी सिवा कोए नै ओजवायै। आज थी तारी मां विधवा सुहागण।'' भारी मन थी बे जणं गाम में प्रवेश करयु अनै हाथाजोड़ी करी तो सरपंच ना खेतर में मजूरी नू काम मल्यु। सरपंच भी दया करी नै खेतर में अेक नानी टापरी रेवा हारू आली। बे जणं मेहनत-मजूरी करि नै जीवणयापन सरू करयु। गाम में कोइक वार प्रकाश नै अेनी उमर थी बडी पत्नी हारू उपहास मलतो, पण मां नी खातिर वना बोलै हामरी लेतो।

समय तो पंछी है। पति-पत्नी ना रूप में मेहनत-मजूरी करतै-करतै छह-सात वरस बीजा नेरि ग्या। कमला गरीब जरूर हति, पण कोई सरपंच, कोई दूकानदार कै कोई बीजा पुरुस नी वांकी नजर अैना पर नीं पड़ी। पड़ती भी हरते, अेनो सुहाग अेना साथै हतो। समय वधतो गयो अनै किशोर प्रकास भी हवै जवान रौबदार पुरुष थई ग्यो। अेना मन में भी खुद ना भावी जीवण अनै जीवणसंगिनी ना विचार आवा लाग्या, पण मां नी खुशी खातर, मां नी सम्मानजनक जिंदगी खातर चुपचाप जीवण चालु राख्यु। ई जे खुद परणवा नी वात करतो तो मां नै पाछी विधवा करवी पड़ती।

मां तो आखिर मां है, बेटा ना मन में चालती हत्ती वातां हामरी लीधी। तुरंत कमला फरी विधवा बणवा नु नक्की करयु।

''छोरा, काल सरपंच साब थी मजूरी नो सब हिसाब कर लेजी, आपणै पोता ना गाम जावा नो टाइम आवी ग्यो।'' कमला बोली।

''पण मां, गाम में तो औ पति-पत्नी वारो नाटक नी चालैगा, जोनी हत्ती तकलीफें तनै फेर जोवी पड़ेगा मां।'' प्रकास अेनी वात काटी नै बोल्यो।

''जवान बेटो साथै हो तो केनी हिम्मत कै विधवा मां ना सांमै जोई ले।'' कमला गर्व थी आंख्यां चौड़ी करीनै कीधू।

पोताना गाम में प्रवेश थी पैलै कमला सुहाग नी हत्ती निशानी काढी मेली, अेना हाते गया समय ना झूठ नो भार भी मन थी उतरी ग्यो। गाम में किराए नु घर लई मां-बेटो रैवा लाग्या। कमला नै नजीक नी फैक्ट्री में अनै प्रकास नै अेक दुकान में काम भी मली ग्यु। समय नेरतो ग्यो। प्रकास नो विवाह नजीक ना गाम नी आशा थी थ्यो अनै अेक सुंदर कन्या नो जनम भी थ्यो।

खुशहाल जिंदगी चालवा लागी। विधवा कमला हवै सुहागण नी थई नै भी खुश तो हती, पण सगा बेटा नी पत्नी बणी जे समय काढ्यो, ई समै कमला वती भुलायेगा, मन नो भार उतरेगा कै नीं, यो तो कमला ई जाणै!

◆◆

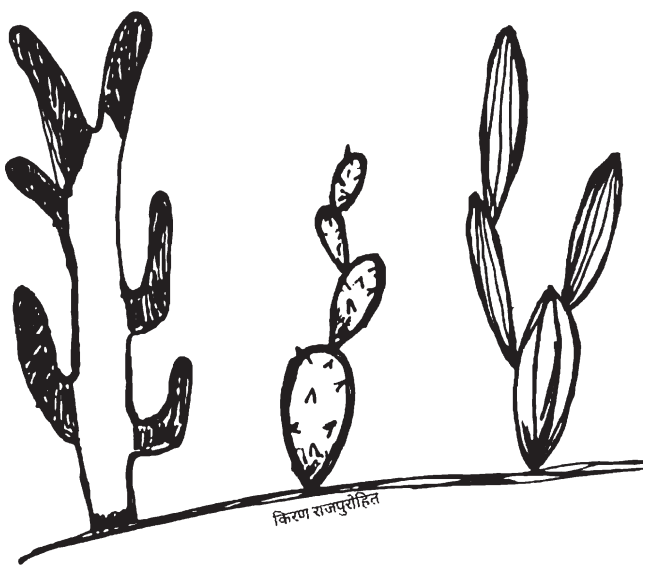

 ISSN : 2320-0995

राजाराम स्वर्णकार

बंदर-बांट

लुच्चा-बदमासां रा ऊंचा ठाठ है
चौडै-धाड़ै चालै बंदर-बांट है

धनवाळां रै गिद्दा, तकिया रेसमी
बाकी घरां में तो टूटेड़ी खाट है

अेकै कानी सगळो ई समाज है
दूजी कानी भायलां री जमात है

धोळी-काळी-भूरी टोप्यां ओढलो
पण टोप्यां रै हेठै गंजी टाट है

बेगी-बेगी भरलां आपां खोपड़ी
जोरदार सबदां री पड़ री छांट है

म्हारी तागत नै जाणै सै भायला,
दुनिया मानै राजाराम सम्राट है

लुच्चा-बदमासां रा ऊंचा ठाठ है
चौड़ै-धाड़ै चालै बंदर बांट है

:: ठिकाणो ::
बर्तन बाजार
बीकानेर (राज.)
334005
मो. 9314754724

कांई हाल है ?

बोल थारा कांई हाल है
जेबां में अणूतो माल है
चोरी-चकारी कर लूट्यो
औ सगळां नै मलाल है

जग नै नीं लेवण दै जक
भायलां रो लेवै है भख
जाणूं हूं मोटी खाल है
बोल थार कांई हाल है

मूंछ्यां कांई ताणै है थूं
सांमै खड़्यो थारै काळ है
ऊभो है नाड़की न्हाख'र
जाणू हूं, आ नई चाल है

ध्यान राखजै रे मायावी
अबकी थारो फोरो साल है
जेबां में थारै अणूतो माल है
बोल थारो कांई हाल है ?

◆◆

ISSN : 2320-0995

पूनम चंद गोदारा

चिड़कल

पांख्यां नै कर भारी चिड़कल
ऊंची भर उडारी चिड़कल

जुलम जमानै रा भोग्या सै
थूं पण है कद हारी चिड़कल

अेक न अेक दिन होणी चौड़ै
करतूतां बै सारी चिड़कल

के हिम्मत है, आंख मिलावै
मींटां राखो खारी चिड़कल

साम्हां आय घुरावै गीदड़
तो बण जाणो ना'री चिड़कल

थूं रणचंडी झांसी दुर्गा
थारी शेर सवारी चिड़कल

अब अैलान खुलो कर दै कै
अब है बारी म्हारी चिड़कल

होणो है, सो होणो है

जो होणो है, सो होणो है
फिर किण बात रो रोणो है

राजा, रंक रळ्या सब रेतां
सब झूठो रोणो-धोणो है

रीत-रिवाज'र रिस्ता-नाता
जगती में सो-कीं ढोणो है

ईं मिजळी दुनियादारी में
बेल्यां इतबार खोणो है

मोह-माया रा बंधण छूटै
तो सुख री सेजां सोणो है

राम रुठ्या प्राण छूट्या
मिट्टी नै मिट्टी होणो है

◆◆

:: ठिकाणो ::
गुसाईंसर बड़ा
तहसील-श्रीडूंगरगढ़
(बीकानेर) राजस्थान
मो. 9799305760

ISSN : 2320-0995

सीमा पारीक

सटको

कोई बात लेय'र जी रै मांय
जद बार-बार हुवै खटको
तो सुणाय दो सटको

जद कोझी तरहां भर जावै
सहन-सगती रो मटको
तो सुणाय दो सटको

समझदार नै तो सैन ई घणी
मूरखां नै तो मारणो ई पड़ै फटको
तो सुणाय दो सटको

हर बार आपां ई नीची क्यूं खींचां
मेटणो ई पड़सी जी रो भटको
तो सुणाय दो सटको

अेक सूं दूजी बार नीं मांगैला
दिखावणो ई पड़सी जोर सूं झटको
तो सुणाय दो सटको।

:: ठिकाणो ::
43-ए, सेक्टर-2
गांधीनगर, चित्तौड़गढ़
मो. 8306345407

गोरी थारो रूप

नैणां री बात सुणावै
चकोरी चंद नै
तकै ज्यूं पूरी रात
ओढणी में लाज
मुळकाण में मिठास
गोरी थारो रूप है
म्हारी अतृप्त तिरस
चांदी सिरसो रंग
सोनै सिरसा बाल
हूं उळझ्यो हूं थारै
सुरमतै रूप जाळ
मैंदी रचिया हाथां में
प्रीत री लकीर
अब इलाज नीं राखै
कोई पीर फकीर
पायल री झणकार
कंगन री टणकार
पग-पग में बसी
थारै फुटरापै री झंकार
थारै काजळ री
कांई लिखूं बात
मिरगानैणी ज्यूं
तकूं दिन-रात
रूप री राणी
थारो सिणगार
मंदिर में देवी ज्यूं थरप'र
म्हैं पूजूं थनै ई दिन रात
कर'र बंद म्हारै
मनड़ै रा किंवाड़।

रुतां रो मेळो

चैत-बैसाख में
सूरजड़ो खीरा बरसावै
धरती सूखी
पंखीड़ा पंख पसारै
तपती लू में तनड़ो
खेलरी दांई सुखावै

आसाढ-सावण में
मेह, धुआं उडावै
धरती रो हियो हरखावै
काकड़िया-मतीरिया
कैर-सांगरी
मरुभोम री ओळखाण बतावै

आयो पौस-माघ
अब लेय सियाळो
खालड़ै री खोह में
जबरो धसकावै
बाजरी रो सोगरो
अर काचरियां रो साग
मनड़ै नै अणूतो
तिरपत कर जावै

फागणियै री रुत रंगीली
नामेक ठंडी-मीठी
फूलां री सौरम, पून रा गीत
राजस्थान री रितुआं
भर दे मनड़ै में प्रीत।
◆◆

ISSN : 2320-0995

दुलाराम सहारण

'आस-औलाद' में ल्हुक्या आगलै रचाव रा अैनाण

राजस्थानी री आधुनिक कहाणी-जातरा में श्रीडूंगरगढ रो अेक लूंठो मुकाम है। मालचंद तिवाड़ी, मदन सैनी, चेतन स्वामी, श्रीभगवान सैनी, सत्यदीप आद री कहाणियां राजस्थानी पाठकां नै आपरी ओप साथै मोवती रैवै। नवै बोध अर नवी लकब साथली समझ इण गांव में श्रीडूंगरगढ़ पुस्तकालय री सबळाई सूं तो बणी ई बणी, पण साथै ई श्याम महर्षि री लगोलग साधना इणमें हूंस सूंपबो करी। अेक माहौल बण्यो अर इण माहौल में चोखी निपज हुयी। किसान री भासा में कैवूं तो खेत घणो ऊरमावान हुवो भलांई पण वींरी चोखी सार-संभाळ नीं करीजै, चोखो बायरो नीं मिलै, बगतसर बिजाई नीं हुवै, बिजाई में सखरो बीज नीं बरतीजै तो खेत खड़्यो अड़कबीज ई उगावै, जोगता फळ कदैई नीं निपजावै। इणी ढाळै श्रीडूंगरगढ़ री धोरां धरती रा अै साहित्यिक खेत निपजावू तो हा, क्यूंकै आंनै बडेरां सूं चोखी राजस्थानी पाळपोख मिली, ठेठ मूळ री सबद-संपदा मिली, पण वीं में बायरो सिरज्यो पुस्तकालय अर श्याम महर्षि नांव रै मिनख। आं खेतां री हरेक हफ्तै सार-संभाळ करीजी, गोस्ठियां करीजी, जरूरी-जरूरी बीज छांटीज्या, वांनै बगतसर तोपीज्या। बगत-बायरै ई सागो दियो अर चोखी निपज बखारी आय लागी।

इण भरेड़ी बखारी रा जोगता नांवां में सूं अेक नांव है— मदन सैनी रो।

मदन सैनी नै जाणणियां जाणै कै वै ब्यौवारू मिनख है जिका तो है, खुद खटनै आगलै रो भला करणियां है। म्हारै चेतै है

:: ठिकाणो ::
पार्क रै नेड़ै, गांधीनगर
चूरू (राज.) 331001
मो. 8619951603

कै बी.अे. रै दिनां में म्हारो वां सूं जद कागद-ब्यौवार बण्यो अर हेत घल्यो तो वां ई बतायो कै चूरू में दुर्गेश अर श्रीभगवान सैनी सूं मिलो। वां अर भंवरलाल भ्रमर ई बतायो कै राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर कॉलेज रा पढेसरियां खातर भत्तमाल जोसी पुरस्कार री अेक विगत राखै। औ बतावणो अर आंगळी-सीध करनै आगीनै बधावणो वांरी विरासत तो है ई, पण वांरै भलेरै सुभाव रो दाखलो ई है। इणसूं आगीनै बधां तो जोड़ायत कृष्णा री पीअेच.डी. रा वै गाइड बणनै काम नै इयां सांभ्यो जाणै बडो भाई बध-बधनै हेत सूंपतो व्है। औ बिनां की लाभ-घाटै रै अेक माणस नै चोखो साबत करण रो ब्यौवार हो, जिको अै ओळ्यां लिखती वळा आज कथण में आवै।

मदन सैनी रै व्यक्तित्व नै लेयनै घणो कीं कथीज सकै, उणी ढंग सूं वांरै रचनात्मक कर्तृत्व नै लेयनै ई मोकळी बातां करीज सकै। बियांस तो मदन सैनी अेक टाबर है। टाबर जैड़ो मन अर टाबर जैड़ा सीधा-सा हरफ। पण खासियत कै वांरी रचनावां टाबर अर ग्यान री गांठड़ी बांधेड़ा दोनुवां सारू अेक जैड़ी हुवै। सीधी-सी बांचो अर छेकड़लग पूगो। जद ई तो आलोचक चेतन स्वामी कथै, ''कैवत है कै लिखारे रै व्यक्तित्व री झलक उणरै लेखण मांय आयां बिना कोनी रैवै। हद दरजै री सहळाई, सैजपणो अर सरलता जैड़ी मदन रै व्यक्तित्व मांय है, वैड़ी री वैड़ी उणरी कहाणियां मांय मौजूद है। कहाणियां अवस न्यारी-न्यारी है, पण अंतरदीठ सागण ई रैवै।'' (आस-औलाद, पानो-7)

मदन सैनी राजस्थानी में 'जागती जोत', 'माणक' आद पत्रिकावां में छपनै पैलपोत 'फुरसत' कहाणी पोथी रै मारफत ऊभा हुया। इणी पोथी नै 1999 में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रो 'मुरलीधर व्यास कथा पुरस्कार' मिल्यो। इण पछै कहाणी पोथी 'भोळी बातां' आयी। अबै बरस 2023 में नवी पोथी 'आस-औलाद' आयी है। इण रै पूठै साहित्यकार शंकरसिंह राजपुरोहित लिखै, ''आस-औलाद डॉ. मदन सैनी रो तीजो कहाणी-संग्रै है, जको लगैटगै बीस बरसां बाद छप्यो है। इणमें फगत इग्यारै कहाणियां है। कैवण रो अरथ औ कै वै कहाणियां कम लिखै, पण जकी लिखै वै पाठकां रै मन-मगज में आपरी अलायदी छाप छोडै अर कहाणी रा पात्र सुधी पाठक री चितार सूं बिसार्‌यां नीं बिसरै।'' (आस-औलाद, फ्लैप-1)

मदन सैनी री नवी कहाणी पोथी 'आस-औलाद' में इग्यारै नीं, बारह कहाणियां है— 'चेड़ो', 'नामरद', 'तागड़ी', 'सौराई', 'आस-औलाद', 'हेताळू', 'दाग', 'बदळाव', छींकी', 'मुगती', 'खेल' अर 'आप-आपरार भाग'। समकालीन आधुनिक कहाणियां रै संचै आं नै कूंतां तो अै कहाणियां सरलमनां लिखारै री भोळी बातां-सी लागै। पण अै भोळी बातां वां पाठकां रै हीयै रमै जिका पाठक हाल ई आदर्सवाद रै वीं तागै ताण साहित्य-समाज री कूंत करै, जिको सत्त री तांत बाजै। सत्त गयां पत है, अर सत बोल्यां

ई मुगत है री आ सामाजिक व्यवस्था मदन सैनी नीं फगत आपरी सोच में देखै, पण इण रचाव में सांपरत ई करै।

सिरै कहाणी में 'आस-औलाद' री सौगन खावतै गवाह री पींडी धूजै अर वो पंचायती छोडनै चाल बहीर हुवै, वीं गवाह नै लागै कै मुकदमै सूं बेसी आस-औलाद है अर आस-औलाद माथै सत री पत नीं डिगण देवणी चाईजै। जदकै दुनियावी साच इणसूं उळट है। कूड़ री कचेड़ी अर झूठ रै मुकदमा तिरतै इण समाज में पाठक इण रचनां नै जूनी माननै खारज करै तो करो भलांई, पण मदन सैनी रो तो गवाह जान मोहम्मद रो औ ई साचलो समाज है अर इणी रै ओळै-दोळै वांनै रचणो चोखो लागै।

धरम री फरूकती धजा बिचाळै डोरा-डांडां अर मंतर-जंतर सागै आखा देखनै तागड़ी ढूंढण रा किस्सा कद 'चेड़ो' अर 'तागड़ी' बणनै कहाणी बण जावै, कैयीजै नीं। मदन सैनी जैड़ा कहाणीकार इणां नै इत्ती सरळता सूं पाठकां साम्हीं परूसै कै पाठक कैवै— ''कांई हरेक घटणा कहाणी हुवै?'' औ पाठक 'दाग', 'हेताळू' अर 'बदळाव' कहाणियां पेटै ई सागण बात कैवै तो कीं आंट कोनीं।

कहाणी 'नामरद' अर 'छींकी' इण पोथी री जोरावर कहाणियां है। नामरद कहाणी में बगत री ठीकसर सिरजणा करीजी है तो वठैई बायरै में कथ्य मेळ खावै। सत रै पथ करणीदान अर डावड़ी सूवटी री काम-मनोदसा नै ऊजळै सरूप राखता थकां ई कहाणीकार सो-कीं कैवै अर इण मनोविग्यान नै पाठक साम्हीं राखै। 'छींकी' में ई आपरी भेड़ अर कुत्तै साथलै हेत में हबोळा खावतै गवाळियै नानियै री सोसण रै खिलाफ सोच अर छेकड़ विरोध री हूंस अेक नवो सरूप रचाव में राचै। म्हारी दीठ में आ कहाणी इण संग्रै री सिरै कहाणी है। बियांस तो मदन सैनी टीटण रै ओळावै रचाव राचता ई जस कमावै अर भोळी बातां करता-करता मघजी-जगनजी जैड़ा पात्रां नै अमर कर जावै, बियां ई नानिया-मोटिया पात्र ई आपरी साख थरपणा में ढूकै।

इणी साख थरपणा में 'सौराई' कहाणी रा कथानायक किसनोजी जूझै। खेतीखड़, मजदूर, मैणती मिनख जिकै दिन आपरै गोडां रो पत गेर देवै कै पछै थितियां गिराय देवै, वीं दिन उणरो मरण मानीजै। गांव भाजतै मिनखां नै सौराई सूंपण री टाबरां री हूंस देखै तो वीं सौराई में गटागट जावता मिनख ई देखै। कार करै इत्तैई सांस चालै री विरती मिणती तबकै री जीवण-डोर हुवै। मदन सैनी इण कथ्य नै 'सौराई' कहाणी में ठीक भांत परोट्यो है। कहाणी 'खेल' मदन सैनी री बाल-मनगत नै समझ री तासीर तो चौड़ै करै ई करै पण विजयदान देथा बिज्जी री कहाणी 'अलेखूं हिटलर' नै चेतै ई करावै जठै अेक साइकिल अर ट्रेक्टर री दौड़ हुवै। ट्रेक्टर रै कद पोसावै कै साईकिल वीं सूं आगै जावै, बियां ई 'खेल' में मोटै खिलाड़ियां रै कद पोसावै कै वांरी हेली सूं ऊंचै गरीब रो दरखत सफेदो हुवै।

मदन सैनी री इण पोथी री कहाणियां में कमी है कै वै भाजै भोत तावळी है। अेक कहाणी में दोय-दोय पीढी भाजती दीखै अर चाणचकै कहाणी ई मुकती दीखै। रचनाकर छोटी-सी घटणा नै कहाणी बणावण ढूकै, पण वा कोरौ आदर्स बणनै रैय जावै। कहाणीकार आदर्स री थरपणा में हेताळू नै इलाज बगत पीसां सारू नटाय देवै अर हेजाळू पूठो घरबासो करती दीखै। अेक सजोरै रचनाकार नै इण विरती सूं बचणो चाईजै। कहाणी ठीमरपणै रो काम है, वो मदन सैनी जैड़ो कहाणीकार; जिको बीस बरस पछै कहाणी-संग्रै लेयनै आवै, कर सकै। औ करणो ई चाईजै। करीजैलो तद ई राजस्थानी कहाणी और सबळी हुवैला। 'आस-औलाद' रै इण रचाव में ल्हुक्या आगलै रचाव रा अैनाणां में इण जातरा नै देखीजण री निजू मांग है।

नवी पोथी रो स्वागत है।

◆◆

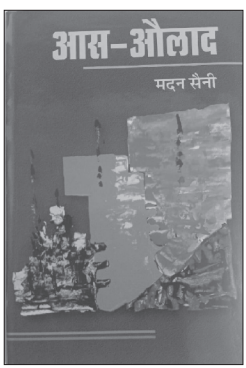

पोथी : आस-औलाद

विधा : कहाणी

कहाणीकार : मदन सैनी

संस्करण : 2023

प्रकाशक : ज्योति पब्लिकेशन, बीकानेर

पाना : 96

मोल : 250 रुपिया

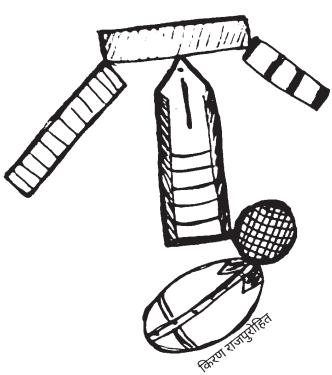

ISSN : 2320-0995